Agewell

(स्पेशल कन्सल्टेटिव स्टेटस, इकॉसॉक, संयुक्त राष्ट्र, 2011)

भारत में
वरिष्ठ नागरिकों के लिए रोजगार एवं सहभागिता अवसरों की स्थिति

रिटायरमेंट के बाद कार्य से जुड़ाव के महत्व पर विशेष प्रकाश

सितम्बर 2025

www.agewellfoundation.org

भारत में वरिष्ठ नागरिकों के लिए रोजगार एवं सहभागिता अवसरों की स्थिति

(रिटायरमेंट के बाद कार्य से जुड़ाव के महत्व पर विशेष प्रकाश)

सितम्बर 2025

एजवेल रिसर्च एंड एडवोकेसी सेंटर

(वरिष्ठ नागरिकों की आवश्यकताओं एवं अधिकारों हेतु)

Agewell

एजवेल फाउंडेशन

एम–8ए, लाजपत नगर–2, नई दिल्ली–110024, भारत | 91–11–29836486, 29830005

agewellfoundation@gmail.com www.agewellfoundation.org

विषय–सूची

क्रम सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
I.	अध्ययन सारांश	4
II.	परिचय	5
III.	अध्ययन के विभिन्न पहलू	6
	i. लाभदायक रोजगार पाने में चुनौतियाँ	11
	ii. वृद्धावस्था में आय सुरक्षा का प्रभाव	13
	iii. SACRED योजना पर विशेष टिप्पणी	14
IV.	अध्ययन के उद्देश्य एवं लक्ष्य	15
V.	कार्यक्षेत्र एवं प्रणाली	18
VI.	अध्ययन की मुख्य खोजें	18
	खंड अः रिटायरमेंट के बाद के कार्य की स्थिति और वित्तीय आय का मुख्य स्रोत	20
	खंड बः दूसरी नौकरी या लाभकारी कार्य में रुचि – विश्लेषण	23
	खंड सः पारिवारिक संबंध एवं संवाद – विश्लेषण	27
	खंड दः साथियों के अवलोकन – विश्लेषण	29
	खंड यः वृद्धावस्था योजनाएँ और सुझाव – विश्लेषण	31
	खंड रः वर्तमान कार्य और बाधाएँ – विश्लेषण	34
	खंड लः स्वास्थ्य, सम्मान और सामाजिक समर्थन – विश्लेषण	37
VII.	प्रतिनिधि मामले	38
VIII.	संबंधित हितधारकों हेतु सुझाव	39
IX.	सुझाव – राज्य–विशेष	41
X.	निष्कर्ष	46

अध्ययन सारांश

भारत के 14.9 करोड़ वरिष्ठ नागरिक (2021 अनुमान), जिनके 2050 तक 30 करोड़ तक पहुँचने का अनुमान है, देश के लिए महत्वपूर्ण संसाधन हैं, फिर भी मात्र 23.1% वरिष्ठ नागरिक ही रिटायरमेंट के बाद कोई काम प्राप्त कर पाते हैं। उनमें से भी ज़्यादातर आर्थिक जरूरतों के कारण कम वेतन वाली नौकरियों या कृषि संबंधी कार्यों में संलग्न पाये जाते हैं। अध्ययन के अनुसार 9% रिटायर हो चुके वरिष्ठ नागरिकों के पास नियमित आय का अभाव है और 35.9% वरिष्ठ नागरिक पेंशन पर निर्भर हैं, जो व्यापक आर्थिक असुरक्षा की ओर इशारा करती हैं।

भारत में, 73.4% लोग रिटायरमेंट के बाद दूसरी नौकरी करने के लिए उत्सुक हैं, जो सक्रिय रहने (93.9%), सम्मान पाने (87.9%), और जीवन की बढ़ती लागत (56.2%) के कारण नौकरी के लिए प्रेरित है। डिजिटल निरक्षरता, बुजुर्गों के साथ भेदभाव और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे जैसी बाधाएँ रिटायरमेंट के बाद काम के अवसरों को सीमित करती हैं। सर्वेक्षण के दौरान 65.7% लोगों ने बताया कि उनके पास सार्थक काम का कोई विकल्प नहीं है।

महिलाओं को अनोखी रोजगार पाने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सर्वे के अनुसार 36% पुरुषों की तुलना में 10% महिलाएं काम में संलग्न हैं। काम से जुड़ाव स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, अलगाव को कम करता है और पारिवारिक संबंधों को मजबूत करता है। फिर भी 64.7% उत्तरदाताओं युवा परिजनों के साथ संवाद का कड़वा अनुभव रहा है। वरिष्ठ नागरिक युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन कर सकते हैं, शिल्प को पुनर्जीवित कर सकते हैं, या समुदायों का नेतृत्व कर सकते हैं, जिससे सरकारी कल्याणकारी योजनाओं का बोझ कम हो सकता है। नीति निर्माताओं को SACRED पोर्टल का विस्तार करना चाहिए, रिटायर्ड लोगों की भर्ती को प्रोत्साहित करना चाहिए, और वृद्धावस्था में कौशल विकास को बढ़ावा देना चाहिए। कॉर्पोरेट जगत को लचीली कार्य़ पद्धतियां बनानी चाहिए, गैर–सरकारी संगठनों को सूक्ष्म उद्यमों का समर्थन करना चाहिए और परिवारों में बुजुर्गों की स्वायत्तता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। राज्य–विशिष्ट रणनीतियाँ (जैसे, केरल के शिक्षा कार्यक्रम, राजस्थान की शिल्प सहकारी समितियाँ) स्थानीय प्रभाव सुनिश्चित कर सकती हैं।

आयु–समावेशी प्रणालियाँ बनाकर, भारत वरिष्ठ नागरिकों को उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने के लिए सशक्त बना सकता है, जिससे समाज के साथ–साथ अर्थव्यवस्था भी समृद्ध होगी।

रिपोर्ट नीति निर्माताओं, सामाजिक संगठनों, निजी उद्यमों और परिवारों को शामिल करते हुए, समावेशी, आयु–अनुकूल प्रणालियाँ बनाने के लिए एक बहु–हितधारक दृष्टिकोण की सिफारिश करती है। ऐसे सहयोगात्मक प्रयास सुनिश्चित कर सकते हैं कि लाभकारी सहभागिता के माध्यम से वरिष्ठ नागरिक सक्रिय, स्वस्थ और उद्देश्य–प्रेरित रहें, जिससे वे राष्ट्रीय विकास में सार्थक योगदान प्रदान कर सकें।

प्रस्तावना

भारत में बुजुर्गों की 14.9 करोड़ आबादी (2021 में 140 करोड़ की कुल आबादी का 10.1%) 2050 तक दोगुनी हो जाएगीं। 70 वर्ष से अधिक की जीवन प्रत्याशा दर, घटती प्रजनन क्षमता और बेहतर स्वास्थ्य सेवा के कारण बुजुर्गों की आबादी बढ़ने की गति अपेक्षाकृत अधिक है। बढ़ते शहरीकरण और एकल परिवारों की बढ़ती लोकप्रियता से पारंपरिक पारिवारिक सहायता के स्तर में कमी आ गई है, जिससे वरिष्ठ नागरिक अलग–थलग या आर्थिक रूप से कमजोर हो गए हैं। जापान के सिल्वर ह्यूमन रिसोर्स सेंटर्स या जर्मनी के लचीले पुनर्नियोजन मॉडल के विपरीत, भारत में रिटायरमेंट के बाद बुजुर्गों की समाज की मुख्यधारा में सहभागिता के लिए जरूरी संरचना का अभाव है। केवल 23.1% वरिष्ठ नागरिक, अक्सर मजबूरी के कारण कृषि क्षेत्र में काम करते हैं। ग्रामीण बुजुर्गों को भौतिक समस्याओं का अधिक सामना करना पड़ता है और शहरी वरिष्ठ नागरिकों को प्रायः बुजुर्गों के प्रति भेदभाव और डिजिटल बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

समाज की मुख्यधारा में सहभागिता स्वास्थ्य, सम्मान और स्वतंत्रता को बढ़ावा देती है, गठिया और अवसाद जैसी बीमारियों को कम करती है और साथ ही सामाजिक समावेश को बढ़ावा देती है। वरिष्ठ नागरिक मार्गदर्शन कर सकते हैं, शिल्प को पुनर्जीवित कर सकते हैं या सामुदायिक पहलों का नेतृत्व कर सकते हैं, फिर भी डिजिटल निरक्षरता, कौशल–हीनता और वरिष्ठ नागरिक–अनुकूल बुनियादी ढाँचे की कमी जैसी बाधाएँ भागीदारी में बाधा डालती हैं। महिलाओं पर परिजनों की देखभाल का अतिरिक्त बोझ रहता है और उनकी पेंशन तक पहुँच भी कम होने के कारण कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

यह रिपोर्ट, 400 जिलों में 10,000 सेवानिवृत्त व वरिष्ठ नागरिकों (55+) के सर्वेक्षण पर आधारित है, जो सहभागिता के अवसरों, बाधाओं और पारिवारिक गतिशीलता का आकलन करती है, और राज्य–विशिष्ट और राष्ट्रीय समाधान प्रस्तुत करती है। वृद्धावस्था को योगदान के एक चरण के रूप में पुनर्परिभाषित करके, भारत स्थायी विकास के लिए वरिष्ठ नागरिकों के ज्ञान का उपयोग कर सकता है, और यह सुनिश्चित कर सकता है कि वे उद्देश्यपूर्ण और सम्मानपूर्ण जीवन जिएं।

पृष्ठभूमि
अध्ययन के विभिन्न पहलू

वृद्धावस्था जीवन का एक स्वाभाविक और अपरिहार्य चरण है, फिर भी इसके निहितार्थ जीव–विज्ञान से कहीं आगे तक फैले हुए हैं। 1.4 अरब से अधिक की आबादी वाले भारत में, बढ़ती वृद्ध आबादी का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव गहरा और बहुआयामी है। बढ़ती जीवन प्रत्याशा, घटती प्रजनन दर और बेहतर स्वास्थ्य सेवा ने इस जनसांख्यिकीय परिवर्तन को तेज कर दिया है, जिससे वरिष्ठ नागरिक नए अवसरों और चुनौतियों के केंद्र में आ गए हैं। जैसे–जैसे भारत एक विकसित अर्थव्यवस्था बनने का प्रयास कर रहा है, उसका सबसे जरूरी काम यह सुनिश्चित करना है कि वरिष्ठ नागरिकों की न केवल देखभाल की जाए, बल्कि उन्हें सार्थक रूप से व्यस्त भी रखा जाए।

परंपरागत रूप से, रिटायरमेंट को आराम, एकांतवास और कार्यबल से अलगाव के समय के रूप में देखा जाता रहा है। प्रचलित मानसिकता यह थी कि बुजुर्गों को युवा पीढ़ी के लिए रास्ता बनाने के लिए मुख्यधारा से अलग हट जाना चाहिए। हालाँकि, यह धारणा तेजी से पुरानी होती जा रही है। आज कई वरिष्ठ नागरिक शारीरिक रूप से सक्रिय, मानसिक रूप से चुस्त और अनुभव, कौशल व ज्ञान से समृद्ध हैं। अगर उन्हें सही अवसर प्रदान किए जाएँ, तो उनमें समाज और अर्थव्यवस्था में उत्पादक रूप से योगदान देने की अपार क्षमता है।

इसके बावजूद, भारत में एक व्यापक और समावेशी ढाँचे का अभाव है जो वरिष्ठ नागरिकों के लिए लाभकारी जुड़ाव को सुगम बनाता हो। औपचारिक रोजगार के सीमित अवसर, नये कौशल विकास के अपर्याप्त अवसर, और प्रचलित सामाजिक दृष्टिकोण अक्सर वृद्धावस्था को शारीरिक व मानसिक कमजोरी और निर्भरता से जोड़ते हैं। परिणामस्वरूप, कई वरिष्ठ नागरिक जो सक्रिय हैं या सक्रिय बने रहना चाहते हैं, वे खुद को हाशिए पर, कम उपयोगी या आर्थिक रूप से कमजोर पाते हैं।

भारत में वृद्धावस्था का वर्तमान परिदृश्य

स्वतंत्रता–प्राप्ति के समय देश में जीवन प्रत्याशा 32 वर्ष थी जो बढ़कर अब लगभग 70 वर्ष से अधिक हो गई है। प्रजनन दर घट रही है, जिससे पारंपरिक रूप से वृद्धों का भरण–पोषण करने वाली युवा आबादी कम हो रही है। शहरीकरण और एकल परिवारों के उदय से पारंपरिक देखभाल प्रभावित हो रही है।

इस बदलाव के लिए तत्काल नीतिगत और सामाजिक परिवर्तनों की आवश्यकता है, विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों की निरंतर आर्थिक और सामाजिक भागीदारी को सुगम बनाने के लिए।

वैश्विक रुझानों से तुलना

वैश्विक स्तर पर, कई देशों ने सक्रिय वृद्धावस्था की अवधारणा को अपनाया है, विशेष रूप से जापान, जर्मनी और स्वीडन जैसे विकसित देशों में, जहाँ वरिष्ठ नागरिकों को नियमित रूप से कार्यबल में शामिल किया जाता है या सामुदायिक विकास गतिविधियों में लगाया जाता है।

जापान, जहाँ बुजुर्गों का अनुपात सबसे ज़्यादा है, ने रिटायरमेंट के बाद पुनर्नियोजन अनुबंध प्रदान करके रिटायरमेंट को नए सिरे से परिभाषित किया है।

जर्मनी सेवानिवृत्त लोगों के लिए लचीले कार्य मॉडल प्रदान करता है, विशेष रूप से परामर्श और मार्गदर्शन के क्षेत्र में।

इसके विपरीत, भारत में अपने बुजुर्गों की क्षमता का उपयोग करने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण का अभाव है, और अक्सर उन्हें दूसरों पर निर्भरता के नजरिए से देखा जाता है।

भारत में बुजुर्गों का वर्तमान कार्य प्रोफाइल

भारत में बुजुर्ग व्यक्तियों का वर्तमान कार्य परिदृश्य उनकी आर्थिक आवश्यकताओं और सीमित अवसरों के मिश्रण को दर्शाता है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ) और आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) के आंकड़ों के अनुसार, 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के लगभग 36% पुरुष और 10% महिलाएं किसी न किसी रूप में काम में लगे हुए हैं। हालाँकि, यह जुड़ाव मुख्यतः पसंद के बजाय मजबूरी के कारण है। इनमें से अधिकांश बुजुर्ग कर्मचारी वित्तीय असुरक्षा, पेंशन के अभाव या अपने परिवारों का भरण–पोषण करने की आवश्यकता के कारण काम करना जारी रखते हैं।

वृद्धों का अधिकांश रोजगार कृषि क्षेत्र, अनौपचारिक श्रम और छोटे पैमाने के पारिवारिक व्यवसायों में केंद्रित है, जहाँ औपचारिक योग्यता या आधुनिक कौशल पूर्वापेक्षाएँ नहीं हैं। ये क्षेत्र अक्सर सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य सेवा या वित्तीय स्थिरता प्रदान नहीं करते हैं। ग्रामीण और शहरी भारत के बीच स्थिति काफी भिन्न है। ग्रामीण क्षेत्रों में, वरिष्ठ नागरिकों के भूमि–आधारित कार्य, पारंपरिक शिल्प या दिहाड़ी मजदूरी के माध्यम से जुड़े रहने की संभावना अधिक होती है। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में, वरिष्ठ नागरिकों को डिजिटल निरक्षरता, नौकरियों के औपचारिककरण और आयु–समावेशी रोजगार के अवसरों की कमी के कारण अधिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। शहरी वृद्धों को युवा, तकनीक–ज्ञान सम्पन्न कर्मचारियों से भी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है, जिससे रिटायरमेंट के बाद उनके रोजगार की संभावना और कम हो जाती है।

ग्रामीण और शहरी जमीनी हकीकत

भारत में वरिष्ठ नागरिकों के लिए जमीनी हकीकत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच काफी भिन्न है, जो सामाजिक–आर्थिक संरचनाओं, रोजगार के स्वरूप और सेवाओं तक पहुँच से प्रभावित होती है। ग्रामीण भारत में, वरिष्ठ नागरिकों के कृषि, पशुपालन और हस्तशिल्प जैसे पारंपरिक व्यवसायों में लगे रहने की संभावना अधिक रहती है। इन भूमिकाओं के लिए औपचारिक शिक्षा या आधुनिक तकनीकी कौशल की आवश्यकता नहीं होती, जिससे ये बुजुर्गों के लिए सुलभ हो जाती हैं। हालाँकि, ऐसा काम अक्सर कम वेतन वाला और शारीरिक रूप से थका देने वाला होता है, जिससे वित्तीय सुरक्षा बहुत कम मिलती है। भले ही ग्रामीण क्षेत्रों में बुजुर्गों को आम तौर पर अधिक सामाजिक सम्मान और मजबूत सामुदायिक संबंध प्राप्त होते हैं, फिर भी वे स्वास्थ्य सेवा, परिवहन और आयु–अनुकूल बुनियादी ढाँचे तक पहुँच की कमी से जूझते हैं। सरकारी योजनाएँ और पेंशन अक्सर दूरस्थ और जरूरतमंद बुजुर्ग आबादी तक पहुँचने में विफल रहती हैं।

इसके विपरीत, शहरी भारत में बेहतर जीवन स्थितियों के कारण स्वास्थ्य सेवा, सार्वजनिक सेवाओं और लंबी जीवन प्रत्याशा तक अपेक्षाकृत बेहतर पहुँच पायी जाती है। हालाँकि, बुजुर्गों के लिए नौकरी के अवसर सीमित हैं, क्योंकि कॉर्पोरेट और औपचारिक क्षेत्र के नियोक्ता शायद ही कभी वरिष्ठ नागरिकों के लिए समावेशी मानव संसाधन नीतियाँ या पुनर्नियोजन कार्यक्रम तय करते हैं। बुजुर्गों के साथ भेदभाव प्रचलित है, और वरिष्ठ नागरिकों को अक्सर उच्च जीवन–यापन लागत, मुद्रास्फीति और संयुक्त परिवार प्रणालियों के पतन के कारण आर्थिक तंगी का सामना करना

पड़ता है, जो कभी अपने जीवन में युवा परिजनों का सहारा प्रदान करते थे। परिणामस्वरूप, कई शहरी वरिष्ठ नागरिक अकेलेपन, आर्थिक निर्भरता और लाभकारी कार्यों के कम अवसरों का अनुभव करते हैं।

रिटायरमेंट के बाद का कार्य, सक्रिय व स्वस्थ जीवन कैसे सुनिश्चित करता है?

रिटायरमेंट के बाद का कार्य बुजुर्गों के लिए एक स्वस्थ और अधिक संतुष्टिदायक जीवन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सार्थक गतिविधियों में लगे रहना, चाहे अंशकालिक नौकरी, परामर्श, स्वयंसेवा, या उद्यमिता के माध्यम से, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों को बनाए रखने में मदद करता है। नियमित कार्य दिनचर्या गति, अनुशासन और गतिविधि को प्रोत्साहित करती है, जिससे गठिया, हृदय रोग और मधुमेह जैसी बुढ़ापे से संबंधित बीमारियों की शुरुआत में देरी हो सकती है। मानसिक रूप से, कार्य करने की इच्छा अकेलेपन, अवसाद और संज्ञानात्मक गिरावट का मुकाबला करती है, जिससे दिमाग तेज और भावनात्मक रूप से संतुलित रहता है।

निरंतर काम करने से सामाजिक समावेशन को भी बढ़ावा मिलता है, जिससे वरिष्ठ नागरिक अपने समुदायों से जुड़े रह पाते हैं और अलगाव या बेकारी की भावना कम होती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह आर्थिक स्वतंत्रता में योगदान देता है, परिवार के सदस्यों या अपर्याप्त पेंशन प्रणाली पर निर्भरता को कम करता है। यह वित्तीय स्वायत्तता आत्म–सम्मान और निर्णय लेने की शक्ति को बढ़ाती है। संक्षेप में, रिटायरमेंट के बाद का लाभदायक जुड़ाव न केवल जीवन की गुणवत्ता में सुधार करता है, बल्कि वरिष्ठ नागरिकों को सम्मान, आत्मविश्वास और मकसद की नई भावना के साथ जीवन जीने में सक्षम बनाता है।

भारत में रिटायरमेंट के बाद का जीवनः जमीनी हकीकत

कई लोगों के लिए, रिटायरमेंट जीवन में अचानक निष्क्रियता लेकर आता है। कुछ ही रिटायर्ड नागरिक शौक, यात्रा या सामाजिक कार्यों का आनंद लेते हैं और अधिकांश सेवानिवृत्त लोगों को इन समस्याओं का सामना करना पड़ता है:

- अलगाव, खासकर एकल परिवार की स्थिति में
- गतिहीन जीवनशैली के कारण स्वास्थ्य में गिरावट
- पहचान खोना और आत्म–सम्मान में कमी
- वित्तीय तनाव, खासकर पेंशन नहीं पाने वाले बुजुर्गों में

बुजुर्ग अनुभव और ज्ञान के एक समृद्ध स्रोत के रूप में

बुजुर्गों के पास दशकों का संस्थागत ज्ञान, पेशेवर विशेषज्ञता, संघर्ष समाधान क्षमता और मार्गदर्शन क्षमता होती है। लेकिन व्यवस्थित एकीकरण की कमी और सामाजिक उदासीनता के कारण, उन्हें हाशिए पर धकेला जाता है और अक्सर उन्हें संपत्ति के बजाय बोझ समझा जाता है।

बच्चों के साथ संबंध और परिवार की भूमिका

जब बुजुर्ग आर्थिक रूप से आश्रित होते हैं, तो पीढ़ियों के बीच तनाव पैदा हो सकता है। परिवार कभी–कभी सामाजिक परंपरा या गलतफहमियों के कारण बुजुर्गों को काम करने से हतोत्साहित करते हैं। दूसरी ओर, कई वृद्धों को बुजुर्ग या बेरोजगार परिजन वाले परिवारों का भरण–पोषण करने के लिए मजबूर किया जाता है। कुछ शहरी परिवारों में बुजुर्गों को मानसिक और शारीरिक रूप से व्यस्त रखने की आवश्यकता को लेकर बढ़ती जागरूकता है।

भारत में सेवानिवृत्त और 60+ आयु वर्ग के लोगों के लिए नौकरी के अवसरों की स्थिति

वर्तमान में, औपचारिक रोजगार के विकल्प सीमित हैं। कुछ अवसरों में अंशकालिक परामर्श, कॉर्पोरेट या शैक्षणिक क्षेत्र में मेंटरशिप भूमिकाएँ, ऑनलाइन फ्रीलांसिंग (डिजिटल रूप से साक्षर वरिष्ठ नागरिकों के लिए), वरिष्ठ उद्यमिता और समुदाय–आधारित कार्य या एनजीओ भूमिकाएँ शामिल हैं।

अधिकांश बुजुर्ग अक्सर बिना किसी सामाजिक सुरक्षा या स्वास्थ्य सेवा लाभ के, खेती, छोटे व्यवसायों और देखभाल जैसे अनौपचारिक क्षेत्रों में काम करना जारी रखते हैं।

बुजुर्गों को मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था और समाज में क्यों शामिल किया जाना चाहिए

कार्यबल में शामिल होने से –

- सरकारी कल्याण प्रणालियों पर बोझ कम हो सकता है।
- कुशल, अपेक्षाकृत ईमानदार और अनुभवी श्रमिकों का समूह मिल सकता है।
- कार्यस्थलों में अंतर–पीढ़ीगत शिक्षा को बढ़ावा मिल सकता है।
- वरिष्ठ नागरिकों को मेंटर, उद्यमी या सामुदायिक नेता बनने में सक्षम बनाया जा सकता है।

बुजुर्ग कैसे योगदान दे सकते हैं

- शिक्षा और मार्गदर्शनः युवा पीढ़ी को पढ़ाना या मार्गदर्शन देना।
- शिल्प और पारंपरिक कलाएँः विरासत कौशल को पुनर्जीवित करना और आगे बढ़ाना।
- कृषि और जैविक खेतीः पारंपरिक ज्ञान का सतत उपयोग।
- स्वयंसेवा और सामाजिक कार्यः सामुदायिक विकास, देखभाल, आदि।
- परामर्शः कानून, वित्त, इंजीनियरिंग और चिकित्सा में विशिष्ट ज्ञान प्रदान करना।

रिटायरमेंट के बाद रोजगार पाने की चुनौतियाँ

रोजगार के लाभों के बावजूद, कई बाधाएँ बुजुर्गों को लाभकारी रोजगार पाने से रोकती हैं:

डिजिटल निरक्षरता

आज की बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था में, बुनियादी तकनीकी दक्षता अक्सर आम नौकरियों के लिए भी अपेक्षित समझी जाती है। दुर्भाग्य से, भारत की बुजुर्ग आबादी के एक बड़े हिस्से के पास स्मार्टफोन, कंप्यूटर और इंटरनेट जैसे डिजिटल उपकरणों का अभाव है। अधिकांश बुजुर्गों को अपने कार्यकाल के दौरान डिजिटल साक्षरता विकसित करने का अवसर नहीं मिला, जिससे वे आधुनिक कार्य वातावरण के लिए तैयार नहीं हो पाए। यह तकनीकी अंतर दूरस्थ कार्य, ऑनलाइन जॉब पोर्टल, डिजिटल बैंकिंग और यहाँ तक कि ऑनलाइन एप्लीकेशनों की आवश्यकता वाली सरकारी योजनाओं तक उनकी पहुँच को गंभीर रूप से सीमित कर देता है, जिससे वे मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था से प्रभावी रूप से अलग–थलग पड़ जाते हैं और सार्थक रोजगार पाने की उनकी संभावनाएँ कम हो जाती हैं।

कौशल अंतराल

जैसे–जैसे उद्योग नई तकनीकों और कार्य पद्धतियों को अपनाते हैं, वरिष्ठ नागरिकों द्वारा अपने मुख्य कार्यकाल के दौरान अर्जित कौशल अक्सर अप्रचलित हो जाते हैं। स्वचालन, डिजिटल प्लेटफॉर्म और डेटा–आधारित निर्णय लेने की प्रक्रिया ने रोजगार परिदृश्य को बदल दिया है और नई दक्षताओं की माँग बढ़ गई है। दुर्भाग्य से, भारत में वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए पर्याप्त पुनर्कौशल या कौशल उन्नयन कार्यक्रमों का अभाव है। प्रशिक्षण केंद्र शायद ही कभी वृद्धों को प्रशिक्षित करते हैं, और अधिकांश पाठ्यक्रम नौकरी चाहने वाले युवाओं के लिए डिजाइन किए गए हैं। इससे कई वरिष्ठ नागरिक इनका लाभ नहीं उठा पाते हैं, और वर्तमान रोजगार बाजार की अपेक्षाओं को पूरा करने में असमर्थ रह जाते हैं। परिणामस्वरूप, उनके अनुभव और अनुकूलन व सीखने की इच्छा के बावजूद, उनके संभावित योगदान का उपयोग नहीं हो पाता है।

बुजुर्गों के साथ भेदभाव या एजिज्म

बढ़ती उम्र के आधार पर पूर्वाग्रह या भेदभाव होना रोजगार चाहने वाले वरिष्ठ नागरिकों के सामने एक महत्वपूर्ण बाधा है। कई नियोक्ता इस गलत धारणा के तहत काम करते हैं कि वृद्ध कर्मचारी कम उत्पादक, कम तकनीकी रूप से कुशल, बदलाव के विरोधी या काम के दबाव को झेलने में शारीरिक रूप से असमर्थ होते हैं। इस तरह की रूढ़िवादिता उपेक्षित भर्ती प्रथाओं और कार्यस्थल वातावरण को जन्म देती है, जो परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से वरिष्ठ नागरिकों की भागीदारी को हतोत्साहित करती है। यहाँ तक कि उन क्षेत्रों में भी जहाँ अनुभव मूल्यवान है, वृद्ध उम्मीदवारों को अक्सर युवा उम्मीदवारों के पक्ष में नजरअंदाज कर दिया जाता है। यह पूर्वाग्रह न केवल वृद्धों की गरिमा को कम करता है, बल्कि संगठनों को उनके विशाल संस्थागत ज्ञान और मार्गदर्शन क्षमता का लाभ उठाने से भी रोकता है।

स्वास्थ्य सीमाएँ

बढ़ती उम्र के साथ, कई व्यक्तियों को स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे गतिशीलता में कमी, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, गठिया जैसी क्रोनिक बीमारियाँ, या संज्ञानात्मक कमजोरी। ये सीमाएँ शारीरिक रूप से कठिन कार्य करने या लंबे समय तक काम करने की उनकी क्षमता को प्रभावित कर सकती हैं। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि वे सार्थक योगदान देने में असमर्थ हैं। लचीले शेड्यूल, उपयुक्त भूमिकाओं और स्वास्थ्य सेवा सहायता की मदद से, कई वरिष्ठ नागरिक उत्पादक बने रह सकते हैं। दुर्भाग्य से, वर्तमान नौकरी बाजार इस तरह के लचीलेपन को समायोजित करने के लिए डिजाइन नहीं किए गए हैं, अक्सर वरिष्ठ नागरिकों को अंशकालिक या गतिहीन भूमिकाओं से भी बाहर रखा जाता है। यह उपेक्षा उन्हें और भी अलग–थलग कर देती है और समाज में उनकी सक्षम भागीदारी से वंचित कर देती है।

सहायक बुनियादी ढाँचे का अभाव

भारत का भौतिक और संस्थागत बुनियादी ढाँचा काफी हद तक वरिष्ठ नागरिकों के अनुकूल नहीं है। कार्यस्थलों में अक्सर उम्र के हिसाब से संवेदनशील बुनियादी सुविधाओं जैसे रैंप, आरामदायक फर्नीचर या विश्राम क्षेत्र का अभाव होता है। सार्वजनिक परिवहन प्रणालियाँ भीड़भाड़ वाली हैं, उनका रखरखाव ठीक से नहीं होता है, और वृद्ध यात्रियों, खासकर गतिशीलता संबंधी समस्याओं वाले लोगों के लिए, शायद ही कभी सुलभ होती हैं। इसके अतिरिक्त, किफायती और नजदीकी स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच एक गंभीर चिंता का विषय है। ये सभी कारक उन वरिष्ठ नागरिकों के लिए रसद और शारीरिक बाधाएँ पैदा करते हैं जो अन्यथा काम करने के इच्छुक हो सकते हैं। उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखने वाले बुनियादी ढाँचे के समर्थन के बिना, कई वरिष्ठ नागरिक आराम से और सुरक्षित रूप से रोजगार या सामाजिक जुड़ाव के अवसरों का पता लगाने में असमर्थ होते हैं।

वृद्धावस्था में वित्तीय सुरक्षा का प्रभाव

नियमित आय के स्रोतों का वरिष्ठ नागरिकों के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

स्वास्थ्य

वित्तीय सुरक्षा वरिष्ठ नागरिकों को नियमित चिकित्सा जाँच, आवश्यक दवाएँ और पौष्टिक भोजन का खर्च उठाकर अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने में सक्षम बनाती है। यह निवारक देखभाल और समय पर उपचार तक पहुँच में सहायता करती है, जिससे अस्पताल में भर्ती होने की नौबत अक्सर कम आती है और दीर्घकालिक बीमारियों का प्रबंधन होता है। वित्तीय स्थिरता यह सुनिश्चित करती है कि लागत के कारण स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों की उपेक्षा न हो, जिससे बाद के वर्षों में समग्र शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा मिलता है।

पारिवारिक सम्बन्ध

जब **वरिष्ठ नागरिक** आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते हैं, तो परिजनों द्वारा उन्हें बोझिल समझने की संभावना कम हो जाती है, जिससे परिवारों में कलह कम होता है। यह स्वायत्तता स्वस्थ पारिवारिक गतिशीलता को बढ़ावा देती है, आपसी सम्मान और प्रशंसा को प्रोत्साहित करती है। वित्तीय सुरक्षा भावनात्मक या आर्थिक रूप से दूसरों का समर्थन करने की क्षमता को बढ़ा सकती है, पीढ़ियों के बीच संबंधों को मजबूत कर सकती है और वरिष्ठ नागरिकों को अपनी गरिमा बनाए रखने में सक्षम बना सकती है।

मनोवैज्ञानिक कल्याण

वृद्धावस्था में स्थिर आय आत्म–सम्मान को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाती है, जीवन पर नियंत्रण और उद्देश्य की भावना प्रदान करती है। यह दैनिक जीवनयापन और चिकित्सा आपात स्थितियों से संबंधित चिंताओं को कम करती है। यह जानकर कि उनकी जरूरतें पूरी हो रही हैं, वृद्धों को कम तनाव और अधिक मानसिक शांति का अनुभव होता है। यह स्थिरता आत्मविश्वास को बढ़ाती है, असहायता की भावना को दूर करती है और भावनात्मक लचीलेपन को बढ़ावा देती है, जिससे समग्र मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य में सुधार होता है।

जीवन की समग्र गुणवत्ता

वित्तीय सुरक्षा प्राप्त होने पर, वरिष्ठ नागरिक अपनी शर्तों पर जीवन जी सकते हैं, चाहे वह यात्रा करना हो, अपने शौक पूरे करने हों, या सामाजिक व सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेना हो। यह सक्रियता, समाज से जुड़ाव और संतुष्ट रहने के अवसर प्रदान करती है। आय सुरक्षा बुजुर्गों को स्वतंत्र रूप से चुनाव करने का अधिकार देती है, जिससे समाज में उनके कल्याण और अपनेपन की भावना में सकारात्मक योगदान मिलता है।

SACRED

वरिष्ठ सक्षम नागरिकों हेतु सम्मानपूर्वक पुनर्नियोजन योजना

एक अभिनव योजना जिस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है

- 1 अक्टूबर, 2021 को शुरू किया गया SACRED पोर्टल, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा एक रोजगार प्रदाता मंच है। यह सेवानिवृत्त वरिष्ठ नागरिकों (60+ वर्ष) को नौकरी प्रदाताओं से जोड़ता है, उनके अनुभव और प्राथमिकताओं के अनुरूप पूर्णकालिक, अंशकालिक, स्वतंत्र या निःशुल्क भूमिकाएँ प्रदान करता है।
- यह पहल व्यापक अटल वयो अभ्युदय योजना (AVYAY) ढाँचे का हिस्सा है, जो SACRED, SAGE (सिल्वर इकोनॉमी इनोवेशन पोर्टल), एल्डरलाइन, RVY आदि सहित कई उप–कार्यक्रमों के माध्यम से बुजुर्गों के समग्र कल्याण का समर्थन करती है।
- 1 अगस्त, 2022 तक, 4,527 वरिष्ठ नागरिकों ने SACRED पोर्टल पर पंजीकरण कराया था, जिनमें से पूरे देश में केवल 63 ने ही रोजगार के लिए आवेदन किया था।
- राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में, उत्तर प्रदेश 854 पंजीकरणों के साथ सबसे आगे रहा, उसके बाद पश्चिम बंगाल (581), केरल (421), महाराष्ट्र (379) और दिल्ली (340) का स्थान रहा। कई राज्यों, जनमें नागालैंड, असम, गोवा, कर्नाटक, पंजाब और अन्य शामिल हैं, में पंजीकरण या आवेदन बेहद कम या शून्य रहा है।
- ये आँकड़े बताते हैं कि हालाँकि पोर्टल सक्रिय है लेकिन कभी–कभार ही इसका उपयोग किया जाता है। इस तरह इसका उपयोग सीमित है, और 2022 तक वरिष्ठ नागरिकों और नियोक्ताओं दोनों की ओर से इसका उपयोग अपेक्षाकृत सीमित रहा।
- SACRED पोर्टल अभी भी चालू है, जैसा कि मंत्रालय के आधिकारिक ''एजिंग विद डिग्निटी'' प्लेटफॉर्म पर इसकी उपस्थिति से स्पष्ट है, जो SACRED को AVYAY scw.dosje.gov.in के अंतर्गत चल रही सेवाओं में सूचीबद्ध करता है।
- हालाँकि, इस पोर्टल का अद्यतन, उपयोग, सुधार या प्रदर्शन आँकड़ों पर कोई नया डेटा (2022 के बाद) सार्वजनिक रूप से जारी नहीं किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य और लक्ष्य

इस शोध पहल का प्राथमिक उद्देश्य एक गहन, गुणात्मक और व्यापक अध्ययन के माध्यम से भारत में सेवानिवृत्त और वृद्ध लोगों के लिए लाभकारी कार्य–संलग्नता के अवसरों की उपलब्धता, रिटायरमेंट के बाद की नौकरियों के महत्व और सेवानिवृत्त व वृद्ध लोगों द्वारा रिटायरमेंट के बाद या अपने कार्यकाल के दौरान झेली जाने वाली चुनौतियों का आकलन करना है।

इस अध्ययन का उद्देश्य भारत के वरिष्ठ नागरिकों (55+) के लिए लाभकारी सहभागिता के अवसरों का मूल्यांकन करना है, और वृद्धावस्था स्वास्थ्य, सम्मान और स्वतंत्रता को बढ़ावा देने हेतु रिटायरमेंट के बाद के कार्यों पर जोर देना है। शोध के विशिष्ट उद्देश्यों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- वर्तमान सहभागिता के अवसरों और रिटायरमेंट के बाद वित्तीय निर्भरता का आकलन करना
- डिजिटल निरक्षरता, वृद्धावस्था भेदभाव और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं जैसी बाधाओं की पहचान करना
- पारिवारिक गतिशीलता और पीढ़ियों के बीच संवादहीनता का पता लगाना
- वरिष्ठ नागरिकों के काम करने के अधिकार/लाभकारी सहभागिता पर उनके विचार एकत्रित करना
- हितधारकों के लिए राज्य–विशिष्ट और राष्ट्रीय–स्तरीय समाधान प्रस्तावित करना।

अध्ययन क्षेत्र और कार्यप्रणाली

अध्ययन क्षेत्र और इकाइयाँ

इस अध्ययन का लक्षित समूह पूरा देश था। सभी सेवानिवृत्त और वरिष्ठ नागरिक (55+) को अध्ययन के लक्षित समूह के रूप में लिया गया था। लगभग 14.9 करोड़ वरिष्ठ नागरिकों में से, अध्ययन का हिस्सा बनने के 10,000 वरिष्ठ नागरिकों की सहमति ली गई।

अध्ययन के लिए, पूरे देश को पाँच प्राथमिक भौगोलिक क्षेत्रों में विभाजित किया गया था। अध्ययन के अंतर्गत भारत के 30 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में फैले 400 जिलों को शामिल किया गया।

क्षेत्र	राज्य/केंद्र शासित प्रदेश	नमूना जिलों की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या
I.	उत्तरी भारत		
	दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़, उत्तराखंड, जम्मू और कश्मीर	115	3200
II.	दक्षिणी भारत		
	आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक	87	2000
III.	पूर्वी भारत		
	पश्चिम बंगाल, ओडिशा, असम, मिजोरम, मणिपुर, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड	62	1600
IV.	पश्चिमी भारत		
	राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात और गोवा	70	1800
V.	मध्य भारत		
	मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड और छत्तीसगढ़	66	1400
	सकल भारत योग	**400**	**10000**

उत्तरदाताओं की इस सूची या नमूनाकरण ढाँचे को तैयार करते समय, विविधता के प्रतिनिधित्व को ध्यान में रखा गया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इस शोध के माध्यम से चुनौतियों की एक विस्तृत श्रृंखला की पहचान की जा सके।

अध्ययन का दायरा और कार्यप्रणाली

यह अध्ययन समस्त भारत को कवर करता है, जिसमें 55+ आयु वर्ग के व्यक्तियों को लक्षित करके रिटायरमेंट पूर्व और रिटायरमेंट के बाद के दृष्टिकोणों को शामिल किया गया है, जिसमें राष्ट्रीय मानकों के अनुसार ''बुजुर्ग'' को 60+ के रूप में परिभाषित किया गया है। यह जुड़ाव के अवसरों, वित्तीय अनिश्चितता, पारिवारिक गतिशीलता और सामाजिक समर्थन की जाँच करता है, और क्षेत्रीय असमानताओं और लिंग–विशिष्ट चुनौतियों पर प्रकाश डालता है।

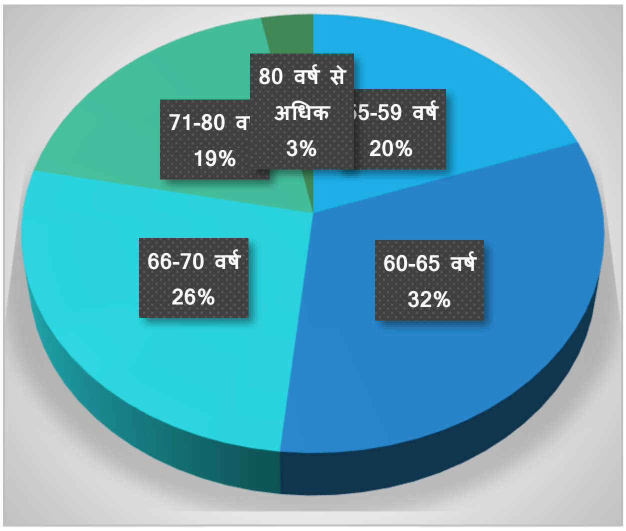

आँकड़ा संग्रह के उपकरण और तकनीकें

सर्वे के दौरान मुख्य ध्यान गुणात्मक जानकारी पर रखा गया, इसलिए, शोध के लिए अधिक सहज दृ ष्टिकोण अपनाया गया ताकि समस्या की समझ विकसित करके एक पैटर्न निकाला जा सके। फोकस समूह चर्चाओं और गहन साक्षात्कारों की मदद से जानकारी को समृद्ध किया गया।

नमूनाकरण, नमूना आकार और अवधि

उत्तरदाताओं के बारे में

- सर्वेक्षण में भारत के 10,000 उत्तरदाताओं के उत्तर शामिल हैं। सबसे बड़ा आयु वर्ग 60–65 वर्ष (32.1%) है, उसके बाद 66–70 वर्ष (26.5%) है। उल्लेखनीय रूप से, 80 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति केवल 3. 2% हैं।

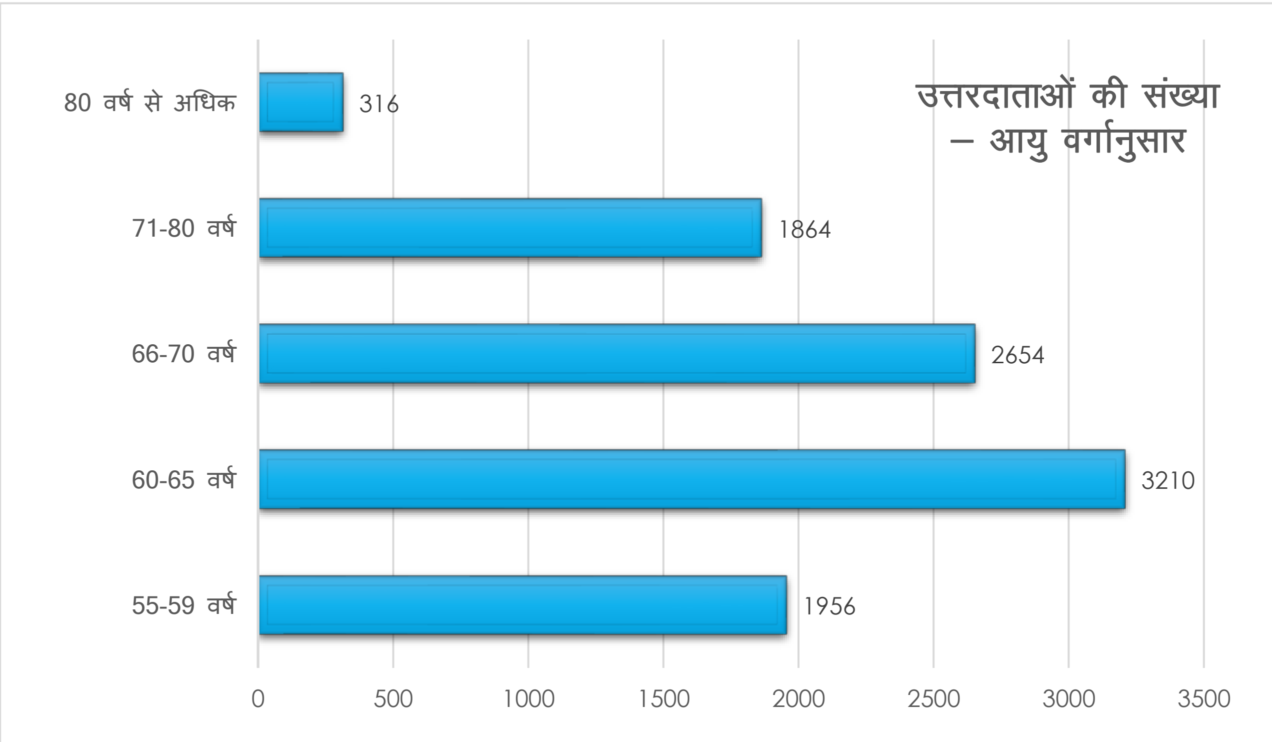

- जहाँ तक नमूने की लिंग–वार संरचना का प्रश्न है, कुल 10,000 उत्तरदाताओं में से 5652 उत्तरदाता पुरुष (55+) और 4358 महिलाएँ (55+) थीं।

- भौगोलिक दृष्टि से, 44.4% उत्तरदाता महानगरों में, 31.5% छोटे शहरों में और 24.1% ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं।

- भारत के 30 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के 510 स्वयंसेवकों ने कुल 10,000 उत्तरदाताओं से बातचीत की। यह सर्वेक्षण जुलाई और अगस्त 2025 में किया गया था।

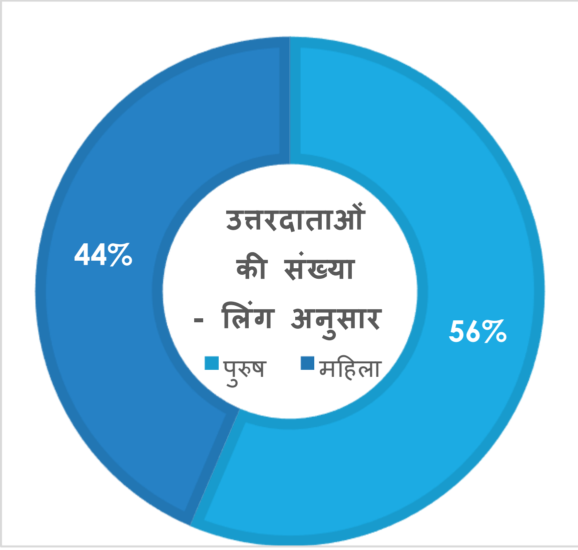

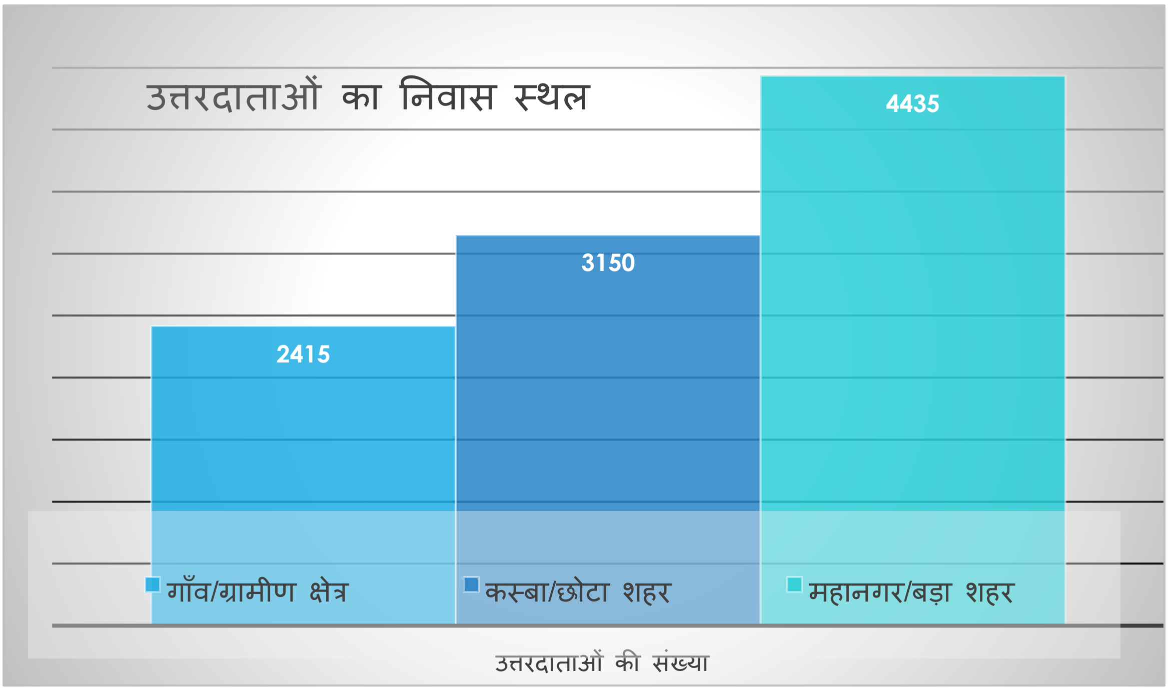

अध्ययन की मुख्य खोजें

खण्ड अ. रिटायरमेंट के बाद के कार्य की स्थिति और वित्तीय आय का मुख्य स्रोत

- सर्वेक्षण के दौरान, कुल 10,000 उत्तरदाताओं में से 8044 उत्तरदाता 60+ आयु वर्ग के थे।

- 60+ आयु वर्ग के 23.1% उत्तरदाता (8044 में से 1859) रिटायरमेंट के बाद काम में लगे हुए हैं, जो उत्पादक वृद्धावस्था गतिविधियों में उनकी सीमित भागीदारी को दर्शाता है।

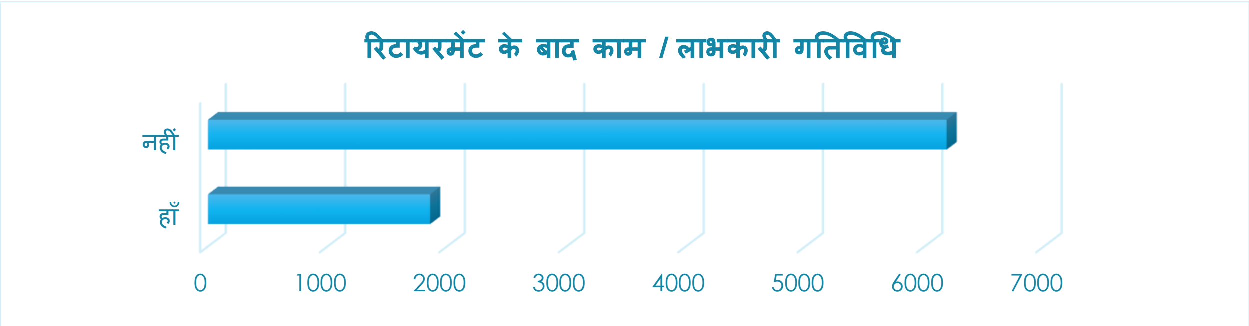

- रिटायरमेंट से पहले सरकारी नौकरी सबसे आम व्यवसाय (35.1%) थी, जबकि गृहिणियाँ (21.8%) और निजी क्षेत्र के कर्मचारी (21.5%) भी महत्वपूर्ण समूह थे।

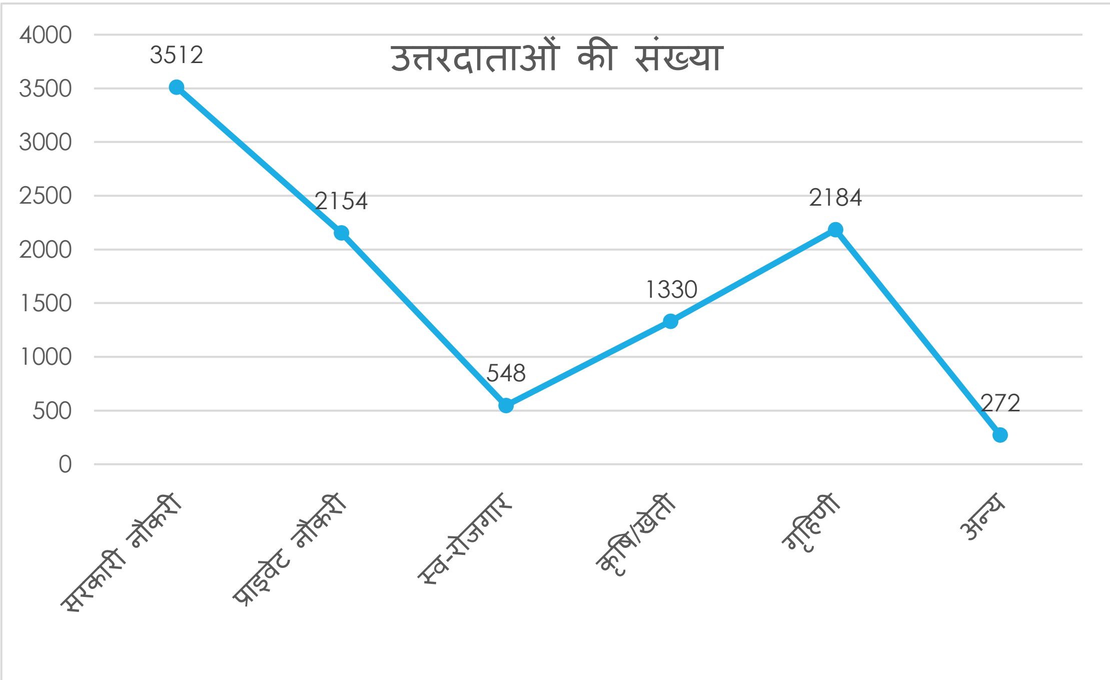

- वित्तीय सुरक्षा के संदर्भ में, 35.6% लोग सरकारी पेंशन पर निर्भर हैं, जबकि 19% वृद्धावस्था पेंशन (1,000–3,000 रुपये प्रति माह) पर निर्भर हैं। 9% उत्तरदाताओं ने कोई नियमित वित्तीय सहायता नहीं मिलने की बात कही।

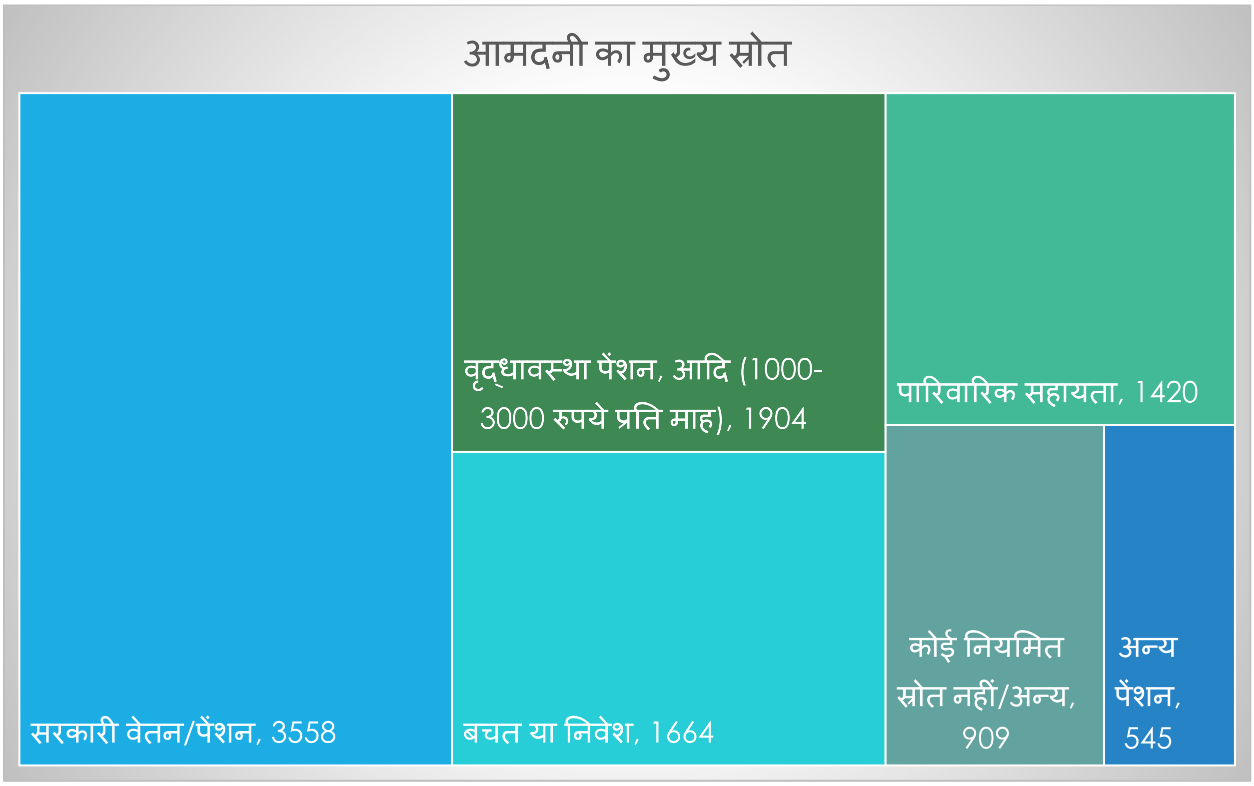

- सर्वेक्षण के दौरान, 35.9% उत्तरदाताओं ने कहा कि सरकारी सेवा/पेंशन उनकी आय का मुख्य स्रोत है। 10,000 उत्तरदाताओं में से, लगभग 19% वृद्धावस्था/विधवा पेंशन आदि प्राप्त कर रहे थे, जो उनकी आय का मुख्य स्रोत था।

- लगभग 16.6% उत्तरदाताओं ने बताया कि उनकी वित्तीय आय का मुख्य स्रोत उनकी बचत या निवेश है, जबकि 14.2% उत्तरदाता पारिवारिक सहायता पर निर्भर पाए गए।

अंतर्दृष्टि

आँकड़ों से पता चलता है कि लक्षित वृद्ध आबादी मुख्यतः शहरी है, पुरुष–बहुल है, जिसका एक बड़ा हिस्सा पेंशन या पारिवारिक सहायता पर निर्भर है। हालाँकि अधिकांश उत्तरदाताओं के पास औपचारिक रोजगार है, लेकिन रिटायरमेंट के बाद एक चौथाई से भी कम लोग उत्पादक रूप से कार्यरत हैं। यह आर्थिक गतिविधियों में वरिष्ठ नागरिकों की भागीदारी की अप्रयुक्त क्षमता को दर्शाता है। लगभग 10 में से 1 उत्तरदाता की न्यूनतम वृद्धावस्था पेंशन पर अत्यधिक निर्भरता और नियमित आय का अभाव, वृद्धों के लिए बेहतर वित्तीय सुरक्षा तंत्र की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करता है।

खंड बः दूसरी नौकरी या लाभकारी कार्य में रुचि – विश्लेषण

- 10,000 उत्तरदाताओं में से, 31.9% (3188) इस पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं, और अन्य 21.5% (2154) थोड़े बहुत इच्छुक हैं। 20% (1998) अभी इस पर विचार नहीं कर रहे हैं, लेकिन भविष्य में कर सकते हैं।

- हालाँकि, 26.6% (2660) इसमें रुचि नहीं रखते। इससे पता चलता है कि अधिकांश उत्तरदाता (73.4%) रिटायरमेंट के बाद काम जारी रखने के लिए तैयार हैं।

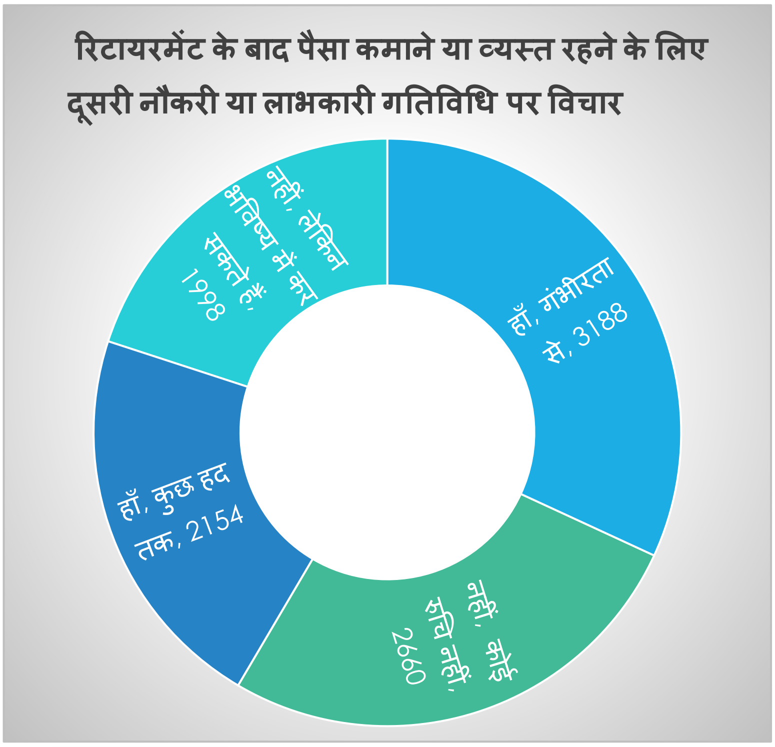

अंतर्दृष्टि

अधिकांश उत्तरदाता रिटायरमेंट के बाद भी काम जारी रखने के लिए तैयार हैं। यह उनकी वित्तीय जरूरतों और कार्य से सार्थक जुड़ाव की इच्छा, दोनों को दर्शाता है। सरकारी नीतियों को वरिष्ठ नागरिकों के लिए लचीले दूसरे करियर विकल्पों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

दूसरी नौकरी या लाभदायक गतिविधि पर विचार करने की प्रेरणा

- 7,340 उत्तरदाताओं (दूसरी नौकरी/लाभकारी जुड़ाव में रुचि रखने वाले) में, सबसे अधिक बताया गया कारण मानसिक व शारीरिक रूप से सक्रिय रहना (93.9%) है, इसके बाद आत्म–सम्मान और गरिमा बनाए रखना (87.9%) है।

- सीमित बचत (48.4%) और बढ़ती जीवन–यापन लागत (56.2%) जैसी वित्तीय चिंताएँ भी मजबूत प्रेरक हैं।

- इसके अतिरिक्त, 82.5% उत्तरदाताओं के अनुसार बच्चों से स्वतंत्रता पाना उनकी प्रेरणा रही है।

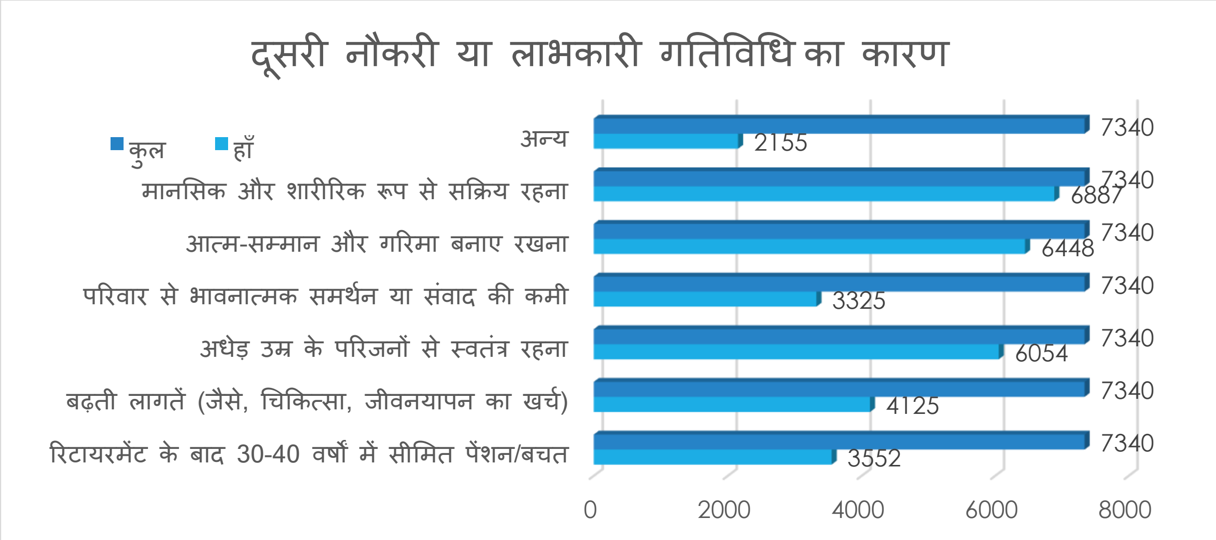

अंतर्दृष्टि

भावनात्मक व मनोवैज्ञानिक कारण वित्तीय कारणों से ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं। बुजुर्ग आय सुरक्षा के साथ–साथ स्वायत्तता, सम्मान और सार्थक जीवन चाहते हैं। कार्य से जुड़ाव मॉडल में स्वास्थ्य और आर्थिक लचीलेपन, दोनों को शामिल किया जाना चाहिए।

रिटायरमेंट के बाद पसंदीदा कार्य के प्रकार

- सबसे पसंदीदा विकल्प औपचारिक रोजगार (69.8%) है, जबकि समाज–सेवा संबंधी कार्य (30.7%) और कृषि (22.7%) भी लोकप्रिय हैं।

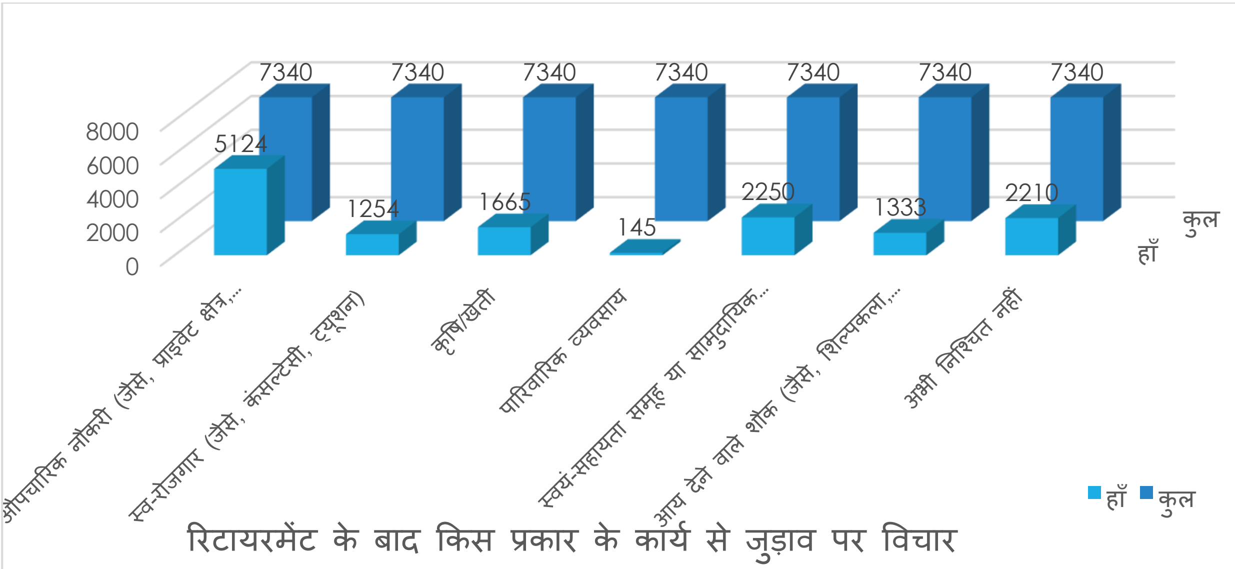

- 30.1% लोग अभी निर्णय नहीं ले पाये हैं, कि उन्हें क्या काम करना चाहिए। केवल 2% लोग पारिवारिक व्यवसाय में काम करने पर विचार कर रहे हैं, जो सीमित अंतर–पीढ़ीगत आर्थिक एकीकरण को दर्शाता है।

अंतर्दृष्टि

बुजुर्ग व्यक्ति अनौपचारिक या पारिवारिक व्यवस्थाओं की तुलना में औपचारिक क्षेत्रों में संरचित भूमिकाओं की ओर अधिक झुकाव रखते हैं। पंसदीदा नौकरी और कौशल पुनर्प्रशिक्षण के लिए मार्गदर्शन और सुविधा मिलने से रुचि को कार्य में बदला जा सकता है।

लंबे सेवानिवृत्त जीवन का प्रबंधन करने के लिए आय अर्जित करना या कार्य से जुड़े रहना कितना महत्वपूर्ण है?

- 41.8% उत्तरदाताओं ने कमाई या कार्य से जुड़ाव को अत्यंत महत्वपूर्ण और 32.1% उत्तरदाताओं ने मध्यम रूप से महत्वपूर्ण माना है।
- केवल 6.7% लोग इसे महत्वपूर्ण नहीं मानते।
- आर्थिक और व्यक्तिगत संतुष्टि के लिए सक्रिय वृद्धावस्था पर जोर स्पष्ट रूप से ज़्यादा पाया गया है।

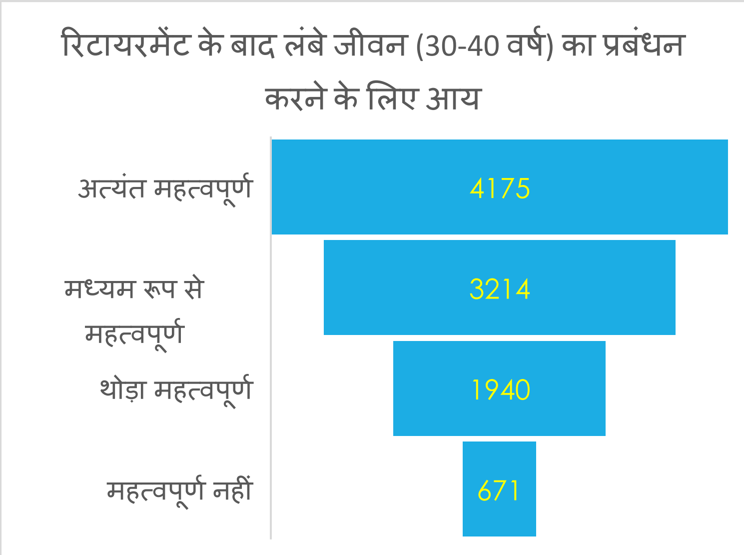

अंतर्दृष्टि

रिटायरमेंट को अब निष्क्रिय जीवन नहीं, बल्कि निरंतर योगदान का एक चरण माना जाता है। सहायता प्रणालियों को वरिष्ठ नागरिकों के लिए समावेशी कार्यस्थल और कार्य–जुड़ाव प्लेटफॉर्म बनाकर इसे संभव बनाना चाहिए।

खंड सः पारिवारिक संबंध और संवाद – विश्लेषण

परिवार के युवा सदस्यों के साथ संवाद

- केवल 12.5% उत्तरदाता (55+) परिवार के युवा सदस्यों के साथ प्रतिदिन संवाद करते हैं, जबकि 22.8% साप्ताहिक बातचीत करते हैं।

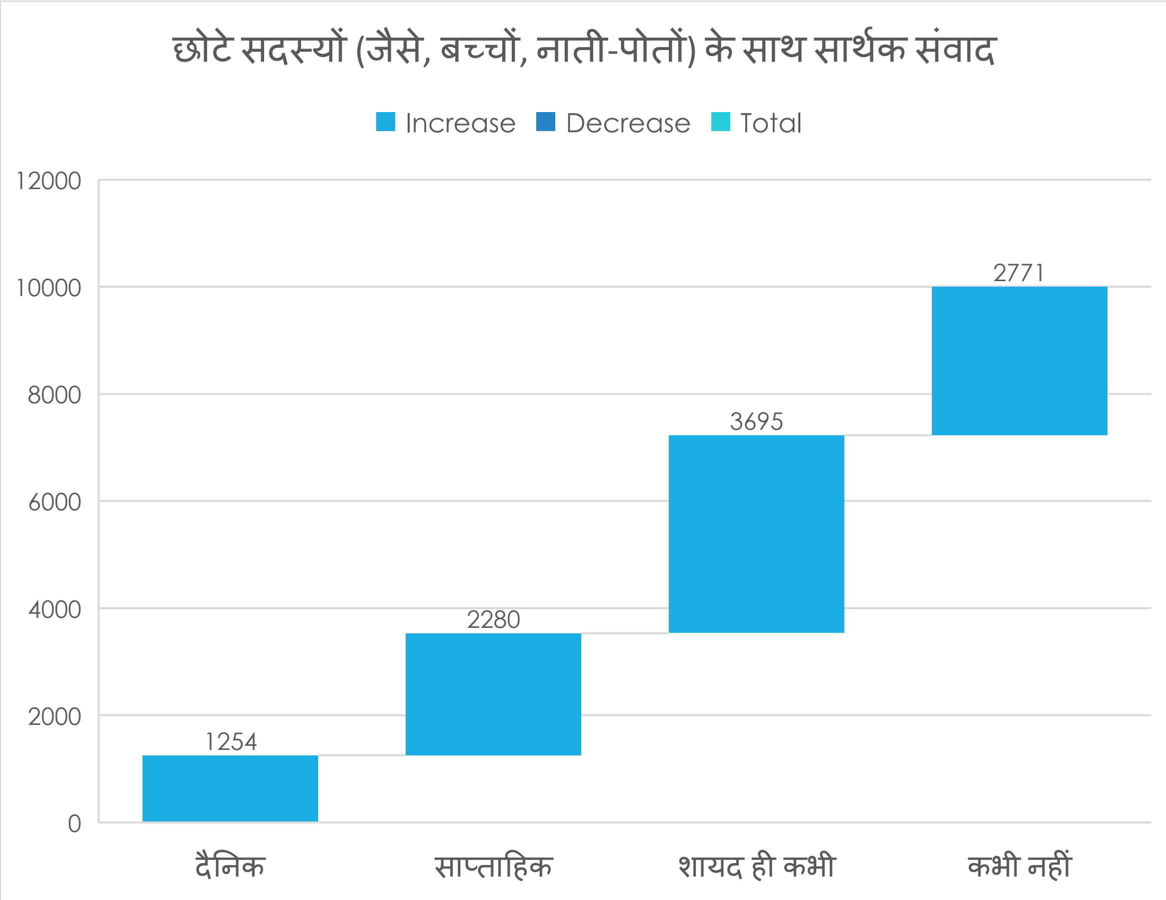

- 64.7% उत्तरदाताओं ने बताया कि सार्थक संवाद या तो दुर्लभ (36.9%) है या बिल्कुल नहीं (27.7%) है। इससे परिवारों के बीच महत्वपूर्ण संवाद अंतराल का पता चलता है।

अंतर्दृष्टि

नियमित, सार्थक बातचीत का अभाव पीढ़ियों के बीच एक चिंताजनक भावनात्मक अलगाव को दर्शाता है। वरिष्ठ नागरिकों में अकेलेपन और सामाजिक अलगाव को दूर करने के लिए अंतर–पीढ़ी संवाद को मजबूत करना महत्वपूर्ण है।

क्या परिवार के युवा सदस्य बुजुर्गों के प्रति सम्मान या परवाह दिखाते हैं?

- सर्वेक्षण के दौरान, यह पाया गया कि केवल 16.7% उत्तरदाताओं को ही पूर्ण सम्मान और परवाह का एहसास होता है।

- लगभग 21.1% ने कहा कि युवा पीढ़ी उन्हें कुछ हद तक सम्मान या परवाह का एहसास कराती है।

- जबकि अधिकांश लोग उपेक्षित महसूस करते हैं – 32.1% ने कहा ''बिल्कुल नहीं'' और 30.2% ने ''शायद ही कभी''। यह अंतर–पीढ़ीगत सहानुभूति और सम्मान के चिंताजनक क्षरण का संकेत देता है।

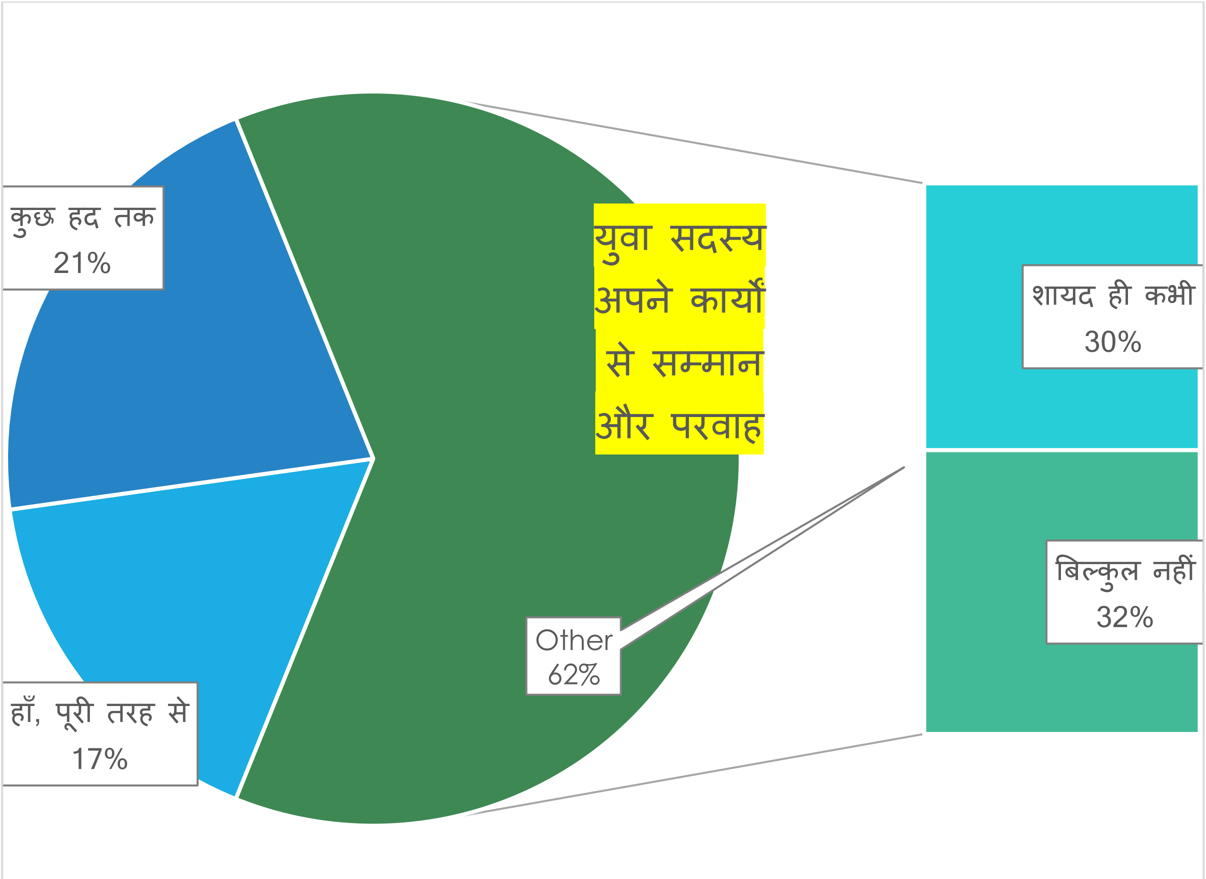

अंतर्दृष्टि

लगभग दो–तिहाई बुजुर्ग परिवार के युवा सदस्यों से सम्मान और देखभाल को अपर्याप्त मानते हैं। यह धारणा भावनात्मक अलगाव को और गहरा कर सकती है और उम्र के प्रति संवेदनशीलता और समावेशी पारिवारिक बंधन पर जागरूकता पहल की आवश्यकता को बढ़ाती है।

परिवार के साथ सीमित संवाद के कारण बुढ़ापे में आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने की बढ़ती जरूरत

- लगभग 59% उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं या दृढ़ता से सहमत हैं कि संवादहीनता से उनकी वित्तीय स्वतंत्रता की इच्छा को बढ़ावा मिलता है, जबकि 25.6% उत्तरदाता इस बात से असहमत हैं। यह भावनात्मक उपेक्षा और स्वायत्तता की इच्छा के बीच एक संबंध को दर्शाता है।

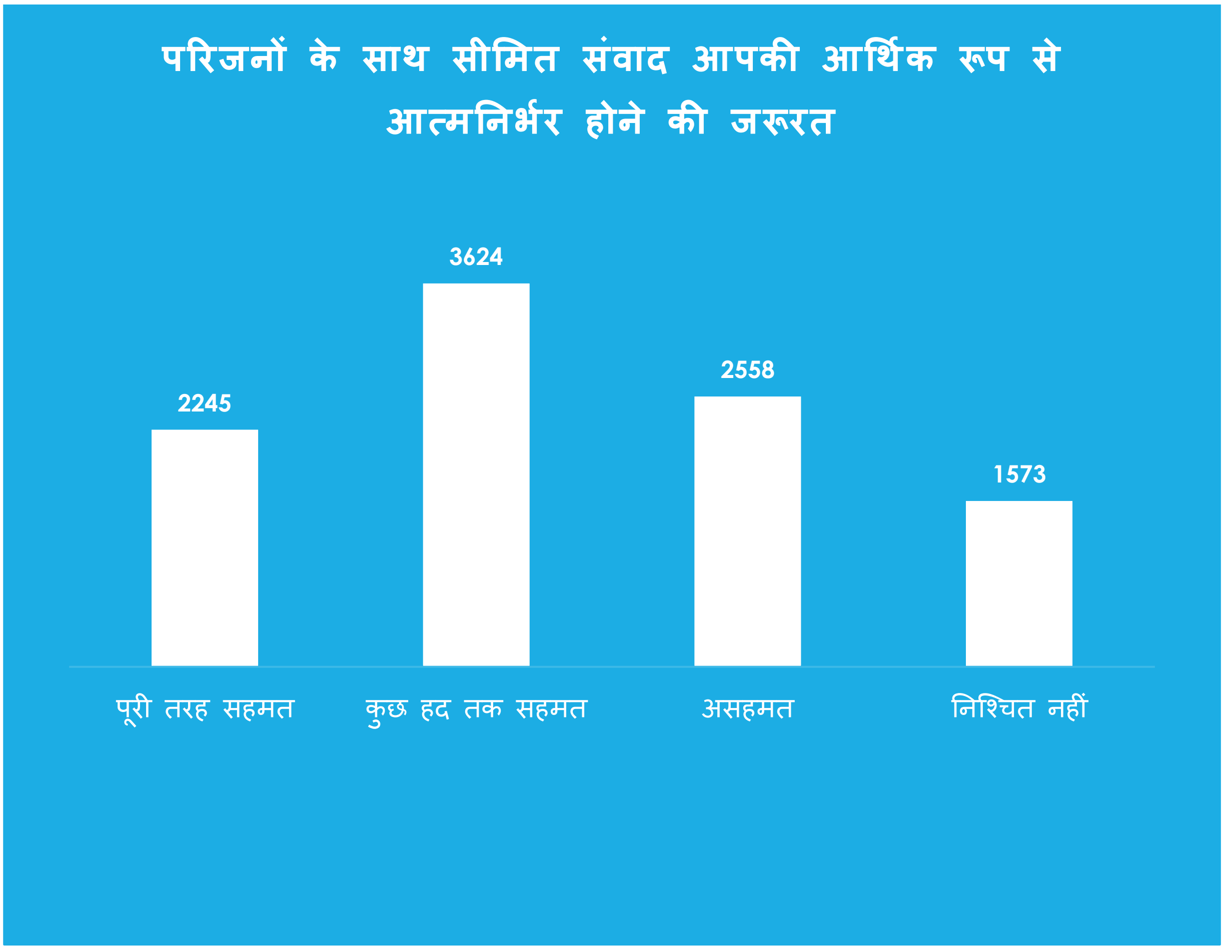

अंतर्दृष्टि

परिवार से भावनात्मक दूरी कई वरिष्ठ नागरिकों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने की ओर धकेलती है। पारिवारिक संबंधों को मजबूत करने से आत्मनिर्भरता की आवश्यकता कम हो सकती है और पीढ़ियों के बीच बेहतर सहयोगात्मक संबंध विकसित हो सकते हैं।

परिवार के युवा सदस्यों के साथ संवाद में सुधार

- उत्तरदाताओं (55+) से प्राप्त सर्वेक्षण के आंकड़ों के अनुसार, अधिकांश उत्तरदाताओं ने ''साथ में अधिक समय बिताने'' (74.2%) और ''आपसी समझ को बढ़ाने'' (65.9%) को प्रमुख समाधान बताया।

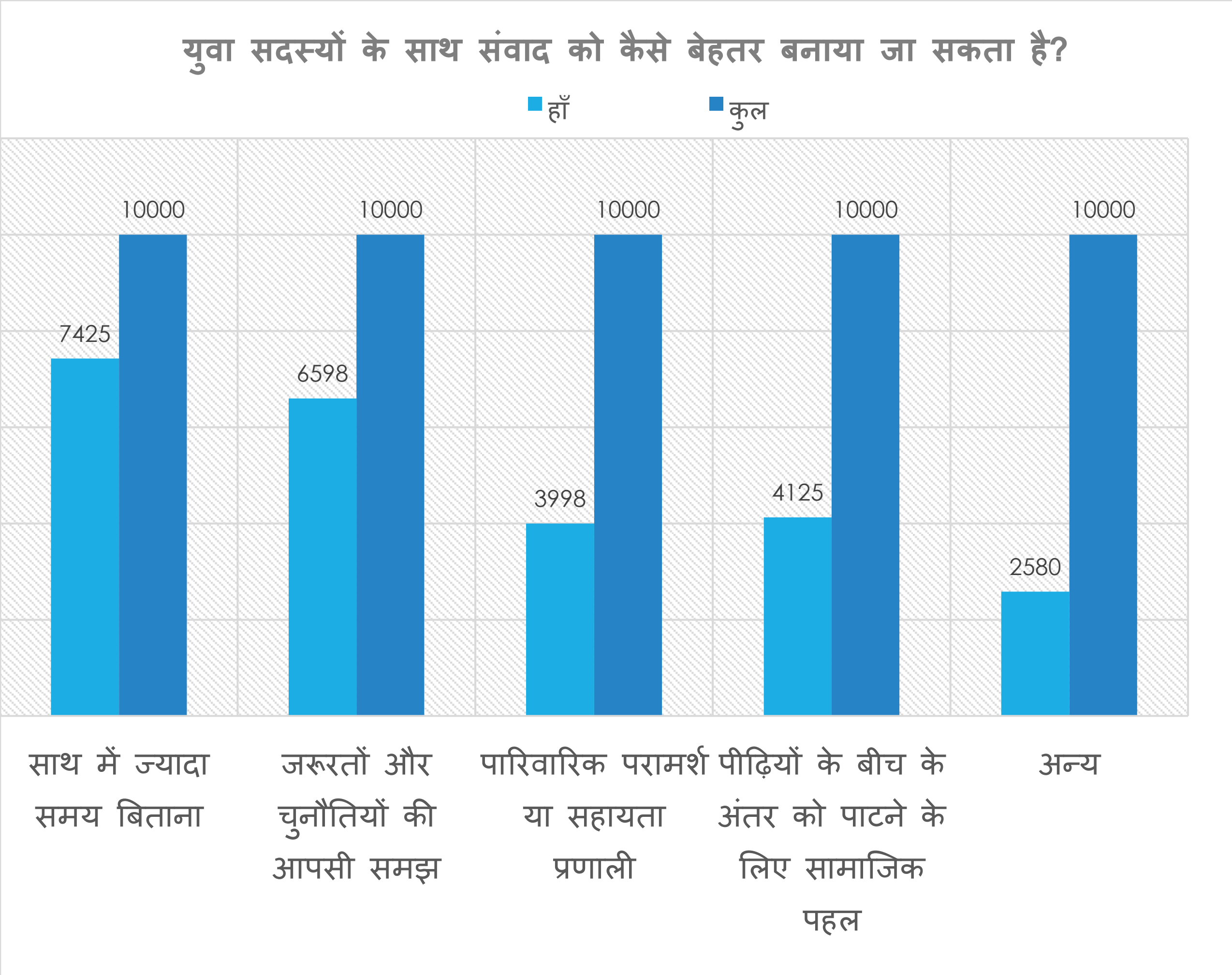

- लगभग 40% उत्तरदाता पारिवारिक परामर्श या पीढ़ियों के बीच संबंध सुधारने की पहल का समर्थन करते हैं, जबकि 25.8% के पास अन्य सुझाव थे।

अंतर्दृष्टि

बुजुर्ग उत्तरदाता तकनीकी नहीं, बल्कि संबंधपरक समाधान चाहते हैं। समय, सहानुभूति और आपसी समझ को सबसे ज़्यादा महत्व दिया जाता है। संरचित कार्यक्रम, सामुदायिक पहल और पारिवारिक सहायता जैसे कदम इस पीढ़ीगत अंतर को पाटने में सहायक हो सकते हैं।

खंड दः साथियों के अवलोकन – विश्लेषण

70–80 की आयु के दौरान वरिष्ठ नागरिकों के सामने आई चुनौतियाँ

- 10,000 उत्तरदाताओं (55+) में, सबसे अधिक देखी गई चुनौती वृद्धावस्था (70 की आयु के बाद) के दौरान अपर्याप्त पेंशन या कम बचत (54.6%) के कारण होने वाला वित्तीय संघर्ष है।

- इसके बाद परिवार के युवा सदस्यों के साथ संवाद की कमी (44.9%) और कार्य क्षमता को सीमित करने वाली स्वास्थ्य समस्याएँ (34.7%) हैं।

- सामाजिक अलगाव या सम्मान की कमी (29.9%) और वयस्क बच्चों से सीमित सहारा मिलना (25.5%) भी मुख्य चुनौती बतायी गई।

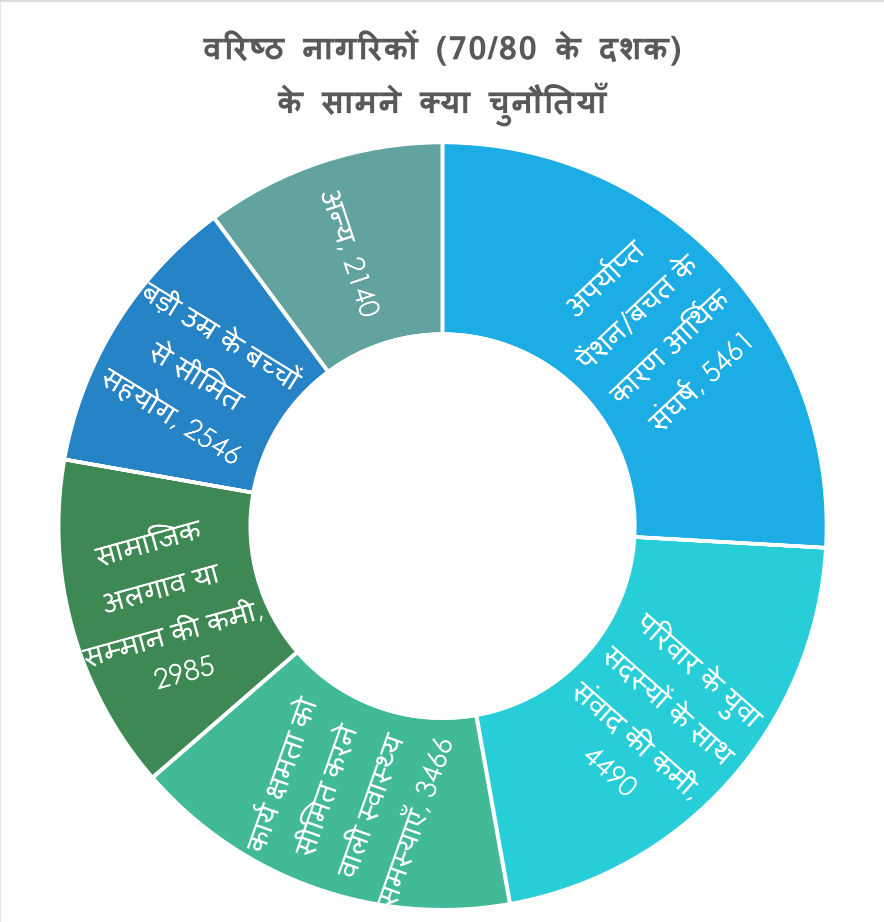

अंतर्दृष्टि

वरिष्ठ नागरिकों को कई परस्पर जुड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे – आर्थिक असुरक्षा, पारिवारिक संवाद में कमी और गिरता स्वास्थ्य। ये मुद्दे सामूहिक रूप से उनकी गरिमा और जीवन की गुणवत्ता के लिए खतरा हैं। इस कमजोर समूह के उत्थान के लिए आर्थिक, सामाजिक और भावनात्मक कल्याण पर केंद्रित एक व्यापक प्रतिक्रिया आवश्यक है।

वरिष्ठ नागरिक (70–80 वर्ष) काम या अपनी आजीविका चलाने के लिए गतिविधियाँ तलाश रहे हैं

- 36.5% लोगों ने 70 या 80 वर्ष की आयु के कई बुजुर्गों को सक्रिय रूप से काम की तलाश करते देखा है, और 29.1% उत्तरदाताओं ने कुछ बुजुर्गों को ऐसा करते देखा है।

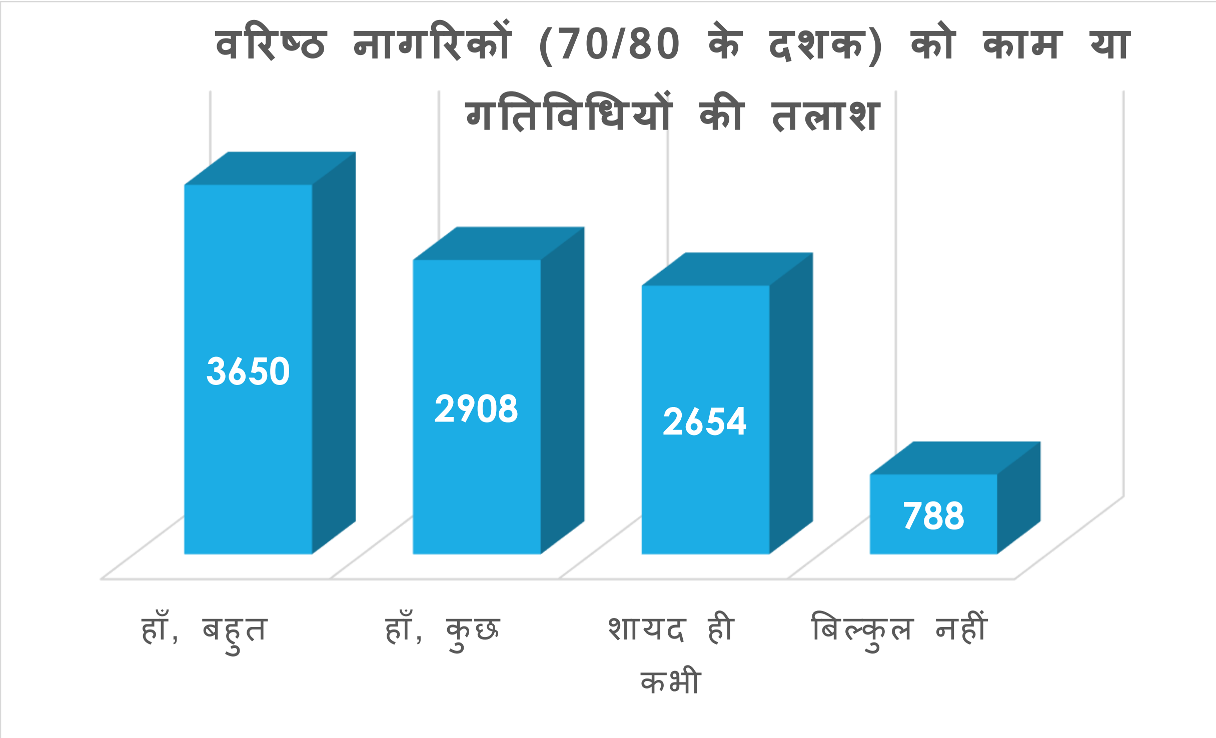

- केवल 7.9% उत्तरदाताओं का कहना है कि उन्होंने ऐसा कोई मामला नहीं देखा है।
- यह दर्शाता है कि वृद्धावस्था में काम की तलाश व्यापक है जो विभिन्न समुदायों में स्पष्ट दिखाई देती है।

अंतर्दृष्टि

अत्यंत वरिष्ठ नागरिकों द्वारा काम की तलाश करने की स्पष्ट प्रवृत्ति आवश्यकता और लचीलेपन दोनों को दर्शाती है। यह सामाजिक सुरक्षा में व्यवस्थागत कमियों और वरिष्ठ नागरिकों की सक्रिय बने रहने की दृढ़ इच्छाशक्ति की ओर इशारा करती है। उनकी क्षमताओं के अनुरूप आयु–समावेशी रोजगार के अवसरों और समर्थन प्रणालियों की तत्काल आवश्यकता है।

खंड यः वृद्धावस्था हेतु योजनाएँ और सुझाव – विश्लेषण

भावी समय (70/80 की उम्र) में आत्मनिर्भर रहने की तैयारी

- 9,684 उत्तरदाताओं में से, 40.7% बचत या निवेश कर रहे हैं और 37% आय–उत्पादक अवसरों की तलाश में हैं।

- वरिष्ठ नागरिकों द्वारा स्वास्थ्य देखरेख की योजना (34.7%) और मजबूत पारिवारिक संबंध (29.6%) बनाना भी उल्लेखनीय हैं।

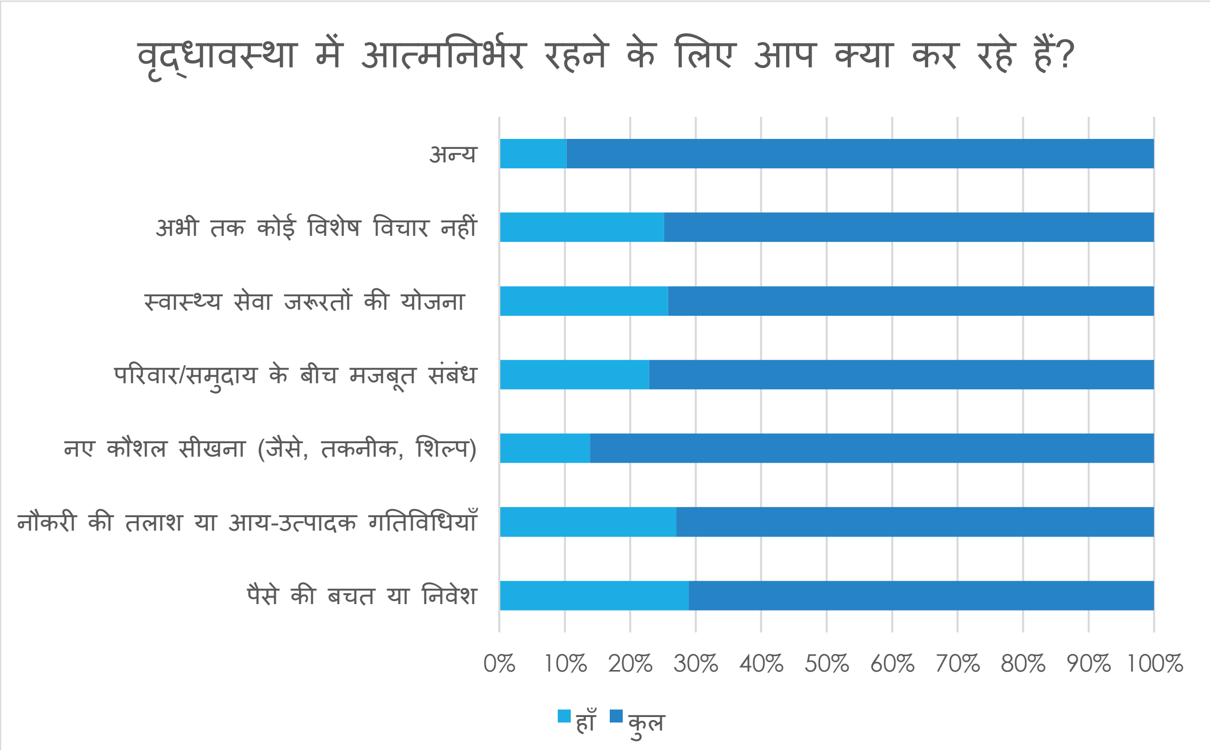

- केवल 16.1% उत्तरदाता सक्रिय रूप से नए कौशल सीख रहे हैं। हालाँकि, 33.6% ने स्वीकार किया कि उनके पास अभी तक भविष्य के लिए कोई विशिष्ट योजना नहीं है।

अंतर्दृष्टि

वरिष्ठ नागरिकों का एक बड़ा हिस्सा अपने बाद के जीवन के लिए आर्थिक और सामाजिक रूप से तैयार रहने की कोशिश कर रहा है। फिर भी, एक तिहाई से ज़्यादा लोगों ने कोई ठोस योजना नहीं बनाई है, जो जागरूकता और सक्रिय वृद्धावस्था को बढ़ावा देने संबंधी समर्थन कार्यक्रमों की आवश्यकता को दर्शाता है।

नौकरी या बेहतर पारिवारिक संबंधों की तलाश कर रहे वरिष्ठ नागरिकों का समर्थन करने के लिए समाज या नीति निर्माताओं के लिए सुझाव

- सर्वेक्षण में शामिल 10,000 उत्तरदाताओं में से, 66.5% लचीले, सम्मानजनक नौकरी के अवसर चाहते हैं।
- पेंशन राशि में वृद्धि (50.4%), स्वास्थ्य सेवा और परिवहन तक बेहतर पहुँच (45.1%), और तकनीकी कौशल प्रशिक्षण (45.9%) भी प्रमुख सुझाव हैं।

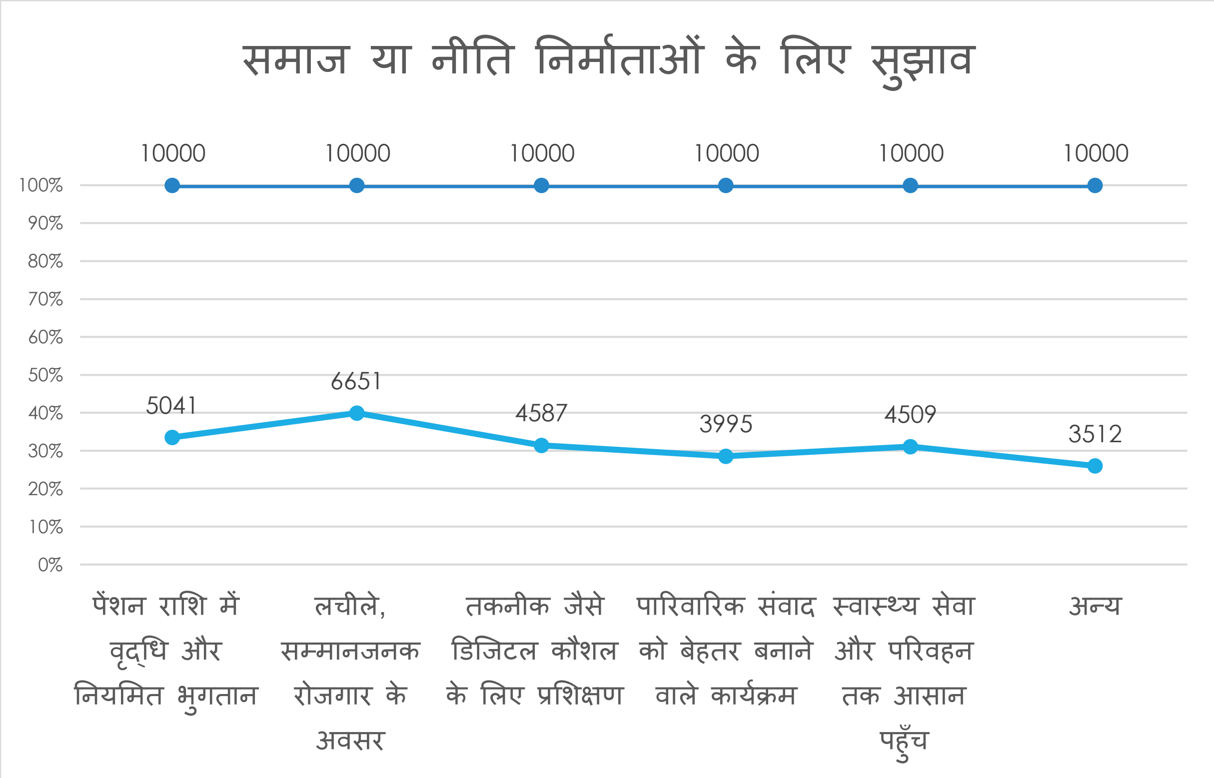

- लगभग 40% उत्तरदाता पारिवारिक संवाद में सुधार का समर्थन करते हैं, जबकि 35.1% लोगों ने अतिरिक्त सुझाव दिए।

अंतर्दृष्टि

वरिष्ठ नागरिक नौकरी के अवसरों, वित्तीय सुरक्षा और सामाजिक समावेशन को प्राथमिकता देते हैं। उनके सुझाव बुढ़ापे में एक सम्मानजनक और सक्रिय जीवन सुनिश्चित करने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण, रोजगार में लचीलापन, कौशल निर्माण, स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच और मजबूत पारिवारिक बंधन की माँग पर प्रकाश डालते हैं।

खंड र: वर्तमान कार्य–जुड़ाव और बाधाएँ – विश्लेषण

रिटायरमेंट के बाद किसी भी गतिविधि (वैतनिक या अवैतनिक) में वर्तमान जुड़ाव की स्थिति

- 10,000 उत्तरदाताओं में से, 28.2% वैतनिक कार्य में हैं, और 15.4% अवैतनिक/स्वैच्छिक कार्यों में संलग्न हैं।
- इस बीच, 29.8% लोगों ने सक्रिय रहने की इच्छा व्यक्त की, लेकिन वे सक्रिय नहीं हैं, और 26.6% उत्तरदाता बिल्कुल भी अपने वृद्धावस्था में कार्य करने में रुचि नहीं रखते हैं।
- इससे पता चलता है कि लगभग आधे वरिष्ठ नागरिक (43.6%) रिटायरमेंट के बाद किसी न किसी रूप में सक्रिय हैं।

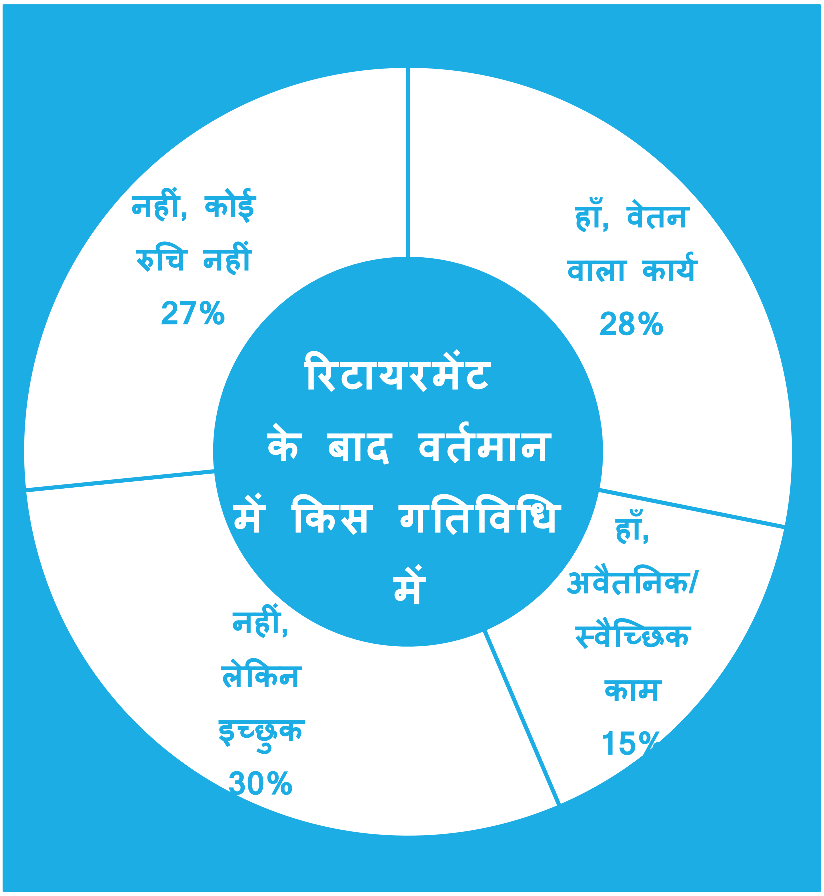

वर्तमान में किस प्रकार की गतिविधियाँ शामिल हैं

- सक्रिय 4,357 वरिष्ठ नागरिकों में, सबसे अधिक औपचारिक नौकरियों (46.8%) और उसके बाद कृषि (38.3%) में संलग्न हैं।
- बहुत कम लोग स्व–रोजगार (3.5%) या पारिवारिक व्यवसायों (2.6%) में शामिल हैं। सामुदायिक सेवाओं में भी केवल 2.8% उत्तरदाता संलग्न पाये गये।

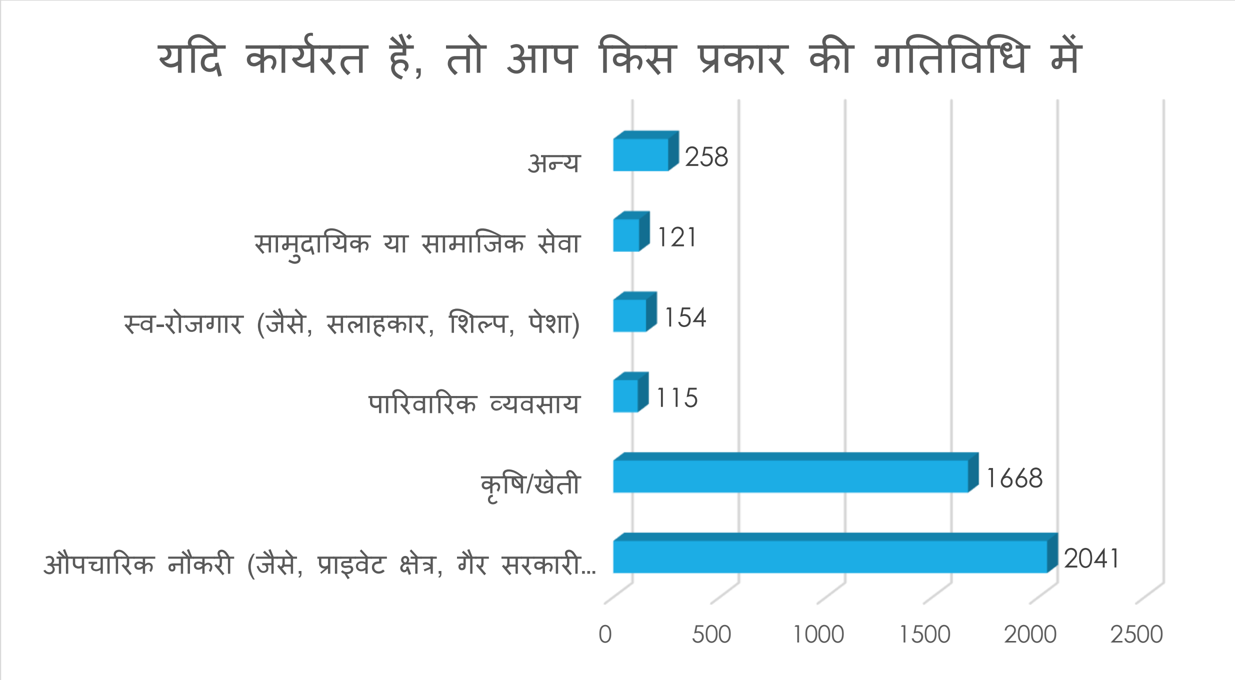

अंतर्दृष्टि

रिटायरमेंट के बाद एक बड़ा हिस्सा अभी भी पेशेवर या सामाजिक रूप से सक्रिय है। भले ही वे सक्रिय रहना चाहता है, लेकिन उन्हें कई बाधाओं का सामना भी करना पड़ता है। यह वरिष्ठ नागरिकों को कार्यस्थलों में फिर से शामिल करने की एक मजबूत संभावना का संकेत देता है, बशर्ते सही अवसर और समर्थन उपलब्ध हों।

वरिष्ठ नागरिकों की सक्रियता ज्यादातर औपचारिक रोजगार या कृषि जैसे संरचित क्षेत्रों में केंद्रित है। उद्यमिता, पारिवारिक व्यवसाय या सामाजिक सेवा में कम भागीदारी, ऐसे अप्रयुक्त अवसरों का संकेत देती है जिन्हें प्रशिक्षण और समर्थन के माध्यम से प्रोत्साहित किया जा सकता है।

बुजुर्गों के सामने लाभदायक काम पाने में बाधा, जो वर्तमान में कार्यरत नहीं हैं, लेकिन रुचि रखते हैं

- 2,683 इच्छुक लेकिन असंलग्न उत्तरदाताओं में, जिन मुख्य बाधाओं का उल्लेख किया गया उनमें अवसरों की कमी (80.3%), तकनीक से संबंधित चुनौतियाँ (61.9%), और परिवहन संबंधी समस्याएं (57.9%) शामिल हैं। सामाजिक चिंताएँ और स्वास्थ्य संबंधी सीमाएँ भी महत्वपूर्ण रूप से उभर कर सामने आयी हैं।

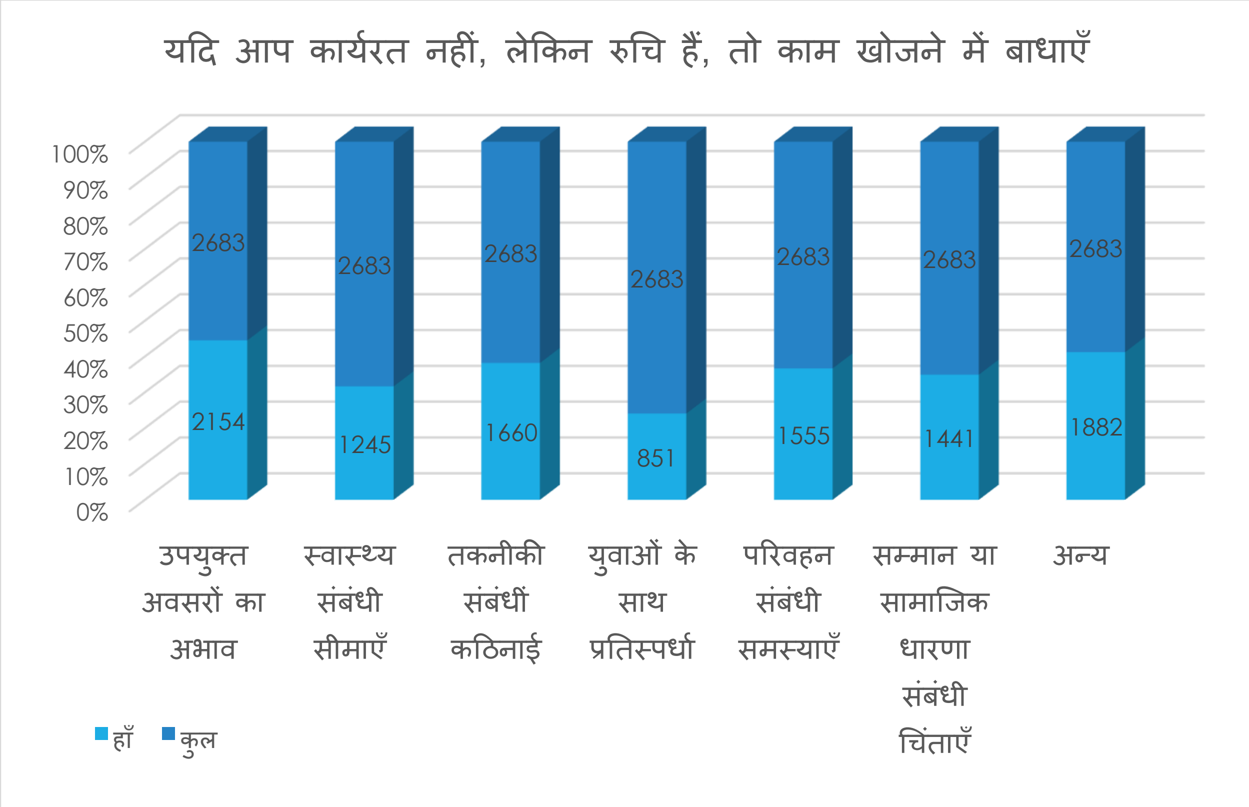

अंतर्दृष्टि

बाधाएँ प्रणालीगत और व्यक्तिगत, दोनों हैं, बुनियादी ढाँचे की कमी से लेकर डिजिटल निरक्षरता तक। वरिष्ठ नागरिकों के लिए जॉब पोर्टल, ऑफलाइन आउटरीच और तकनीकी कौशल विकास जैसे अनुकूलित हस्तक्षेप इस भागीदारी अंतर को पाट सकते हैं।

वरिष्ठ नागरिकों के लिए सार्थक कार्य अवसरों की उपलब्धता

- केवल 2.6% ने अवसरों को ''बहुत अच्छा'' बताया, जबकि 65.7% ने कहा कि ''लगभग कोई नहीं'' हैं। अन्य 20.2% ने उन्हें ''सीमित'' पाया। केवल 11.5% ने उपलब्धता को ''पर्याप्त'' माना।

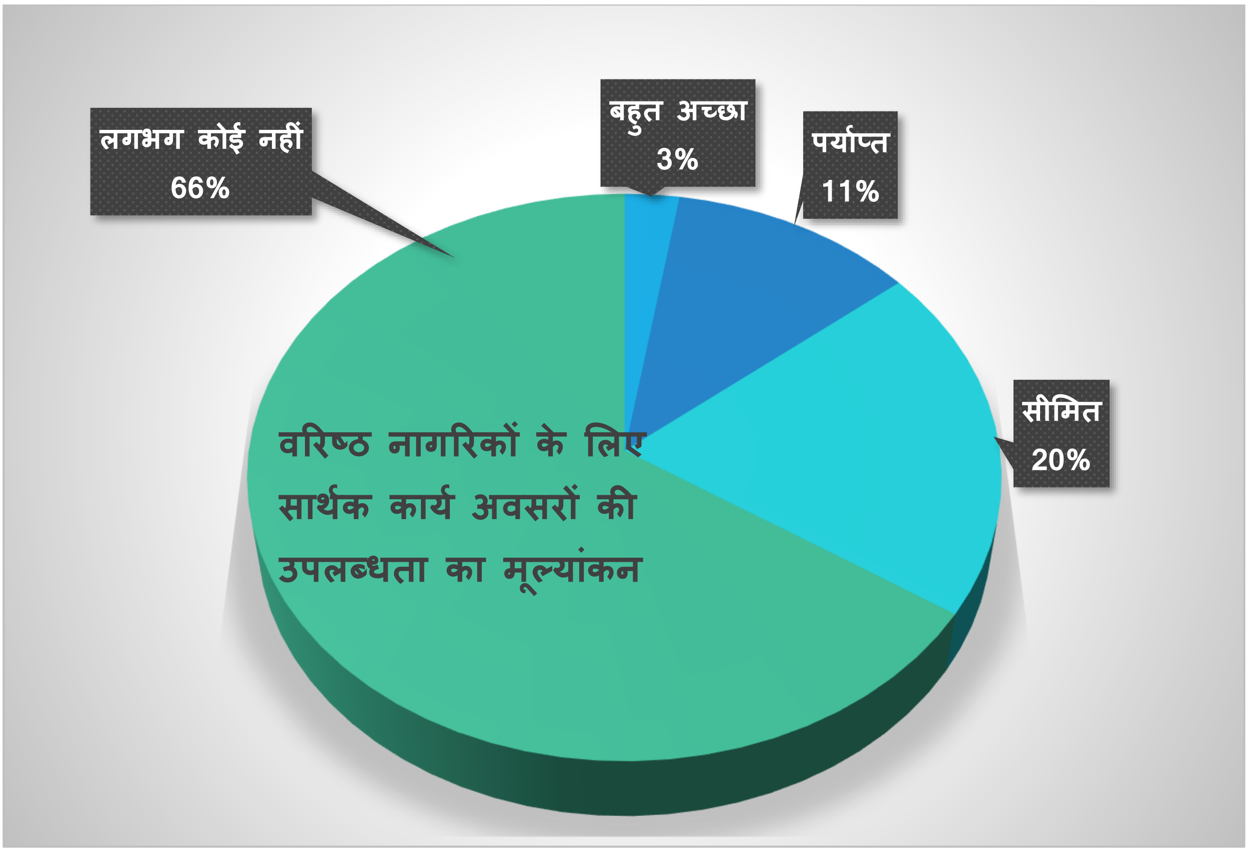

SACRED या किसी अन्य सेवानिवृत्ति–पश्चात लाभकारी सहभागिता योजनाओं के बारे में जागरूकता

अवसरों की कथित कमी वरिष्ठ नागरिकों की भागीदारी में एक बड़ी बाधा है। इसके लिए समावेशी, आयु–अनुकूल कार्यस्थल बनाने और वरिष्ठ नागरिकों को उनकी क्षमताओं और आकांक्षाओं के अनुकूल कार्यों से जोड़ने के लिए जागरूकता अभियान चलाने पर तत्काल ध्यान केंद्रित करने की नीतियों की आवश्यकता है।

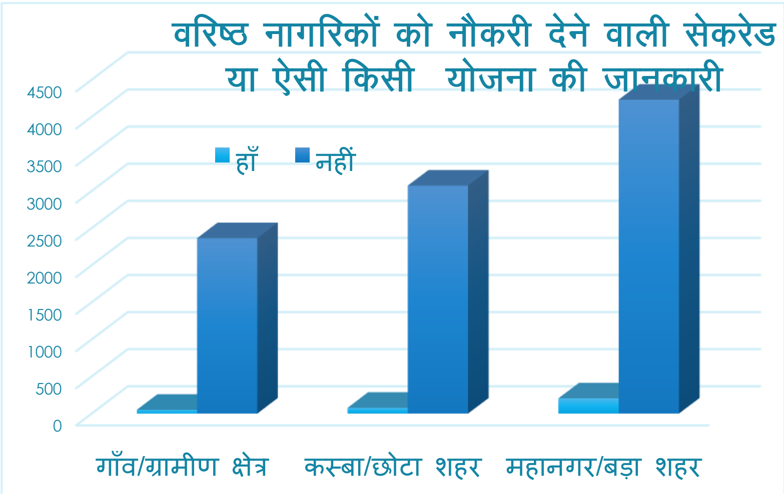

खंड लः स्वास्थ्य, गरिमा और सामाजिक समर्थन – विश्लेषण

सक्रिय रहने या काम करने में शारीरिक स्वास्थ्य की भूमिका

- जब उत्तरदाताओं से उनकी स्वास्थ्य स्थिति और वृद्धावस्था में सक्रिय रहने या काम करने में शारीरिक स्वास्थ्य की भूमिका के बारे में पूछा गया, तो 10,000 उत्तरदाताओं में से 15.5% ने अपने स्वास्थ्य को ''बहुत अच्छा'', 31.6% ने ''अच्छा'' और सबसे बड़े समूह (38.9%) ने ''औसत'' बताया।

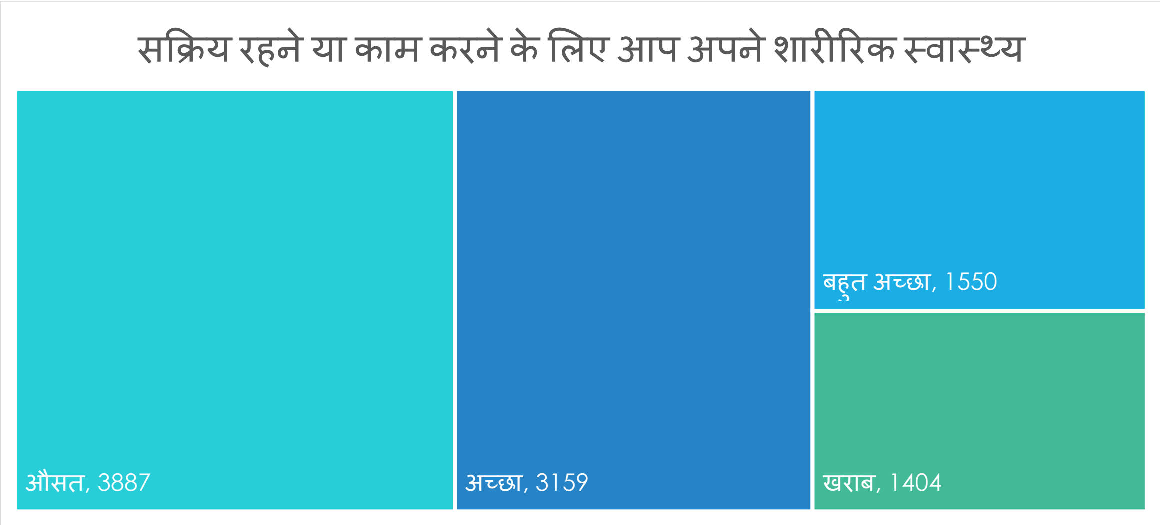

- हालांकि, 14% लोगों को लगता है कि उनका स्वास्थ्य ''खराब'' है, जो दर्शाता है कि एक बड़ा हिस्सा शारीरिक सीमाओं का सामना कर रहा है जो सक्रिय भागीदारी में बाधा डालती हैं।

सक्रिय रहने या काम करने से आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता की भावना कैसे बेहतर होती है?

- 87.5% उत्तरदाता इस बात से ''पूरी तरह सहमत'' हैं कि सक्रिय रहने या काम करने से उनमें आत्मसम्मान की भावना बढ़ती है।
- 5.6% अन्य लोग इससे सहमत हैं, जबकि केवल एक छोटा सा अंश (2.7%) असहमत हैं या इस बारे में अनिश्चित हैं।

वृद्धावस्था में ''सार्थक जुड़ाव'' कैसे मायने रखता है?

- अधिकांश लोगों के लिए, सार्थक जुड़ाव का अर्थ है – स्वतंत्रता और गरिमा बनाए रखना (78.4%), इसके बाद लंबी उम्र के लिए पर्याप्त आय (76.6%) और सक्रिय रहना (67.8%)।

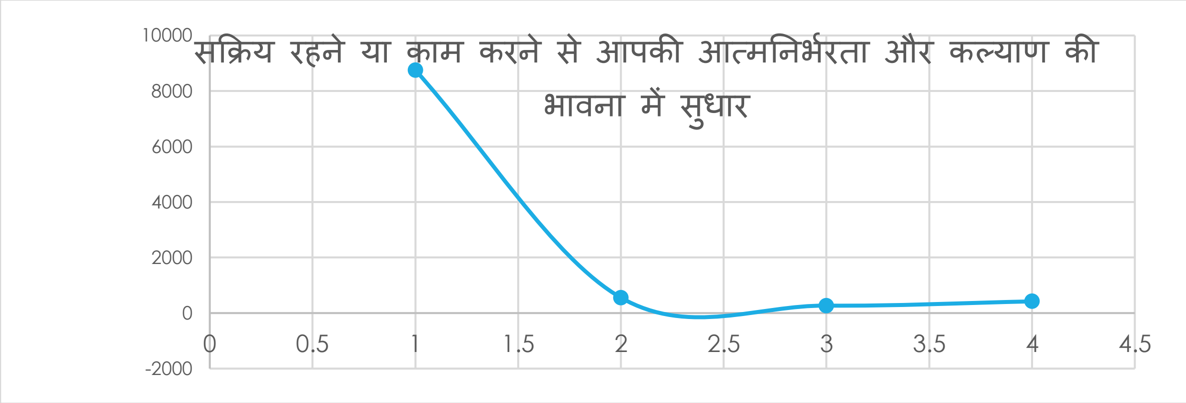

- मजबूत पारिवारिक संबंध (46.7%) और समाज में योगदान (26%) भी मायने रखते हैं, लेकिन इन्हें अपेक्षाकृत कम प्राथमिकता दी जाती है।

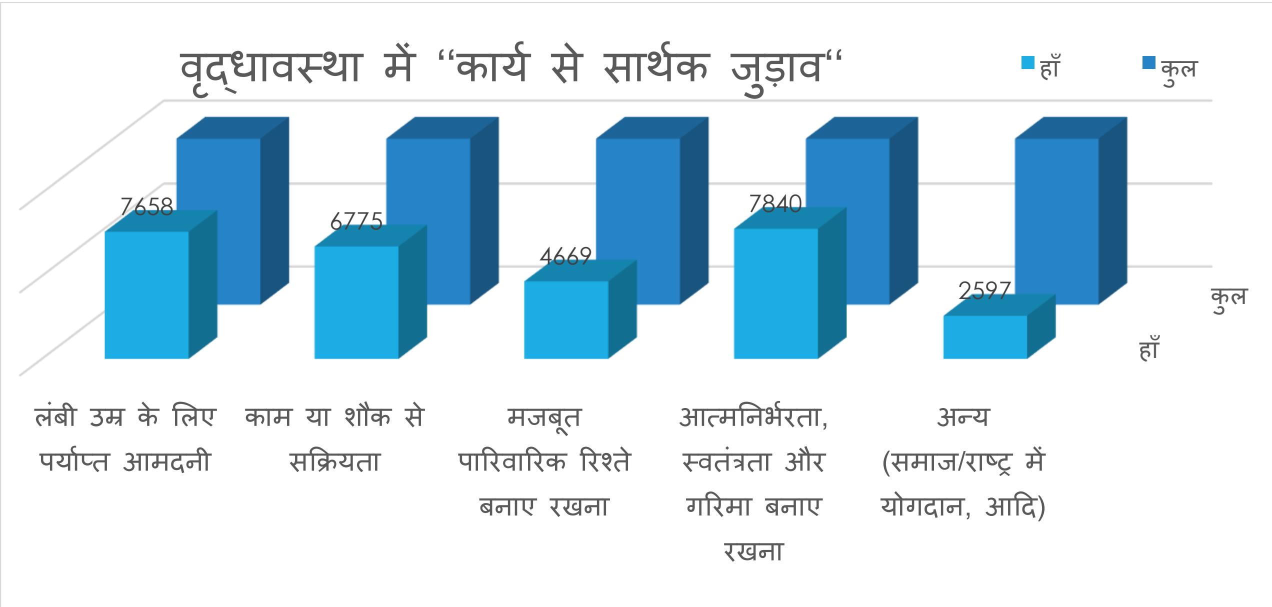

अंतर्दृष्टि

अधिकांश वरिष्ठ नागरिक शारीरिक रूप से सार्थक योगदान देने में स्वयं को सक्षम महसूस करते हैं। हालाँकि लगभग आधे लोग अपने स्वास्थ्य को औसत या खराब मानते हैं। स्वास्थ्य कार्यक्रम और निवारक स्वास्थ्य सेवा सहायता उनकी लंबे समय तक सक्रिय रहने की क्षमता को बढ़ा सकती है।

यह लगभग सर्वमान्य है कि सक्रिय जुड़ाव भावनात्मक और मानसिक कल्याण को बढ़ाता है। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि वृद्धावस्था संबंधी नीतियों को स्वास्थ्य और वित्त से आगे बढ़कर वरिष्ठ नागरिकों की भागीदारी और सम्मानजनक अवसरों को भी बढ़ावा देना चाहिए।

वरिष्ठ नागरिक सार्थक जुड़ाव को स्वायत्तता, वित्तीय सुरक्षा और सम्मान के साथ जोड़ते हैं। सम्मानजनक कार्य, वित्तीय नियोजन और समाज में समावेशी भूमिकाओं को सक्षम बनाने वाले कार्यक्रम वरिष्ठ नागरिकों को सक्षम, सशक्त और समुदाय में अच्छी तरह से एकीकृत महसूस करने में मदद कर सकते हैं।

प्रतिनिधि मामले अध्ययन

परमानंद दांडेकर, 58, सेवानिवृत्त सैनिक

- रिटायरमेंट के बाद से, श्री दांडेकर युवा परिजनों के साथ कम बातचीत करने के कारण अकेलापन महसूस कर रहे हैं। उनका मानना है कि वरिष्ठ नागरिकों और युवाओं के बीच नियमित संवाद और साझा गतिविधियाँ अलगाव को कम कर सकती हैं, समझ विकसित कर सकती हैं और वरिष्ठ नागरिकों को भावनात्मक रूप से जुड़ाव का एहसास करा सकती हैं।

वेंकट एस सुब्रमण्यम, 66, चेन्नई

- रिटायरमेंट के बाद, डिजिटल और वित्तीय साक्षरता का प्रशिक्षण लेने के लिए एक सामुदायिक केंद्र में शामिल हुए। अब उनके अपने पोते–पोतियों के साथ साझा गतिविधियों के माध्यम से संबंध बेहतर हो गये हैं।

सोम प्रकाश गांगुली, 65, सेवानिवृत्त इंजीनियर, कोलकाता

- औसत स्वास्थ्य के बावजूद, शारीरिक रूप से सक्षम महसूस करते हैं और किसी कार्य से जुड़े रहने के लिए उत्सुक हैं। वह आत्मनिर्भरता और सम्मान को महत्व देते हैं और मानते हैं कि कल्याणकारी कार्यक्रम, सम्मानजनक कार्य और वित्तीय सुरक्षा के अवसर उन्हें सक्रिय, आत्मनिर्भर और समाज से जुड़े रहने में सक्षम बनाएंगे।

शकील मोहम्मद, 65, बढ़ई, अमरोहा, उत्तर प्रदेश

- समाज और परिवार में योगदान देने के लिए उत्सुक, शकील मोहम्मद को सार्थक काम करने में अब कई बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। उनका मानना है कि प्रशिक्षण, सहायता और छोटे–मोटे बढ़ईगीरी या समाज सेवा के अवसर उनके जैसे वरिष्ठ नागरिकों को उत्पादक भूमिकाओं में पुनः शामिल कर सकते हैं।

नरेश कुमार गुप्ता, 64, सेवानिवृत्त शिक्षक, मयूर विहार, दिल्ली

- वह एक ट्यूटर का कार्य करते हैं, जिससे वे अपने मानसिक स्वास्थ्य में सुधार महसूस कर रहे हैं। वे छात्रों को बुजुर्गों के प्रति सम्मान की भावना रखने के लिए प्रेरित करते हैं। इससे समुदाय–आधारित जुड़ाव का महत्व प्रदर्शित होता है।

सरोजिनी मीना, 62, झालावाड़, राजस्थान

- ग्रामीण राजस्थान से आने वाली, सरोजिनी मीना ने एक एनजीओ के सहयोग से अपने पारंपरिक कढ़ाई कौशल को एक छोटे उद्यम में बदल दिया, युवा महिलाओं को प्रशिक्षण दिया और आज वे 5,000 रुपये प्रति माह कमा रही हैं। उनकी कहानी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए पारंपरिक कौशल का लाभ उठाने की क्षमता को उजागर करती है।

संबंधित हितधारकों के लिए सुझाव/संस्तुतियां

नीति निर्माताओं और सरकारों के लिए

- वरिष्ठ नागरिकों के लिए संरचित रोजगार के अवसर सृजित किये जायें, सक्रिय वृद्धावस्था को बढ़ावा दिया जाए और सार्थक कार्य–जुड़ाव अवसरों से बुजुर्गों की दूसरों पर निर्भरता को कम किया जाए।
- वरिष्ठ नागरिकों के लिए रोजगार सुगम बनाने हेतु राष्ट्रीय वरिष्ठ रोजगार मिशन (SACRED) के बारे में जागरूकता फैलायी जाए।
- बुजुर्ग कर्मचारियों को काम देने वाली कंपनियों के लिए कर लाभ और प्रोत्साहन के प्रावधान किये जाएं।
- वरिष्ठ नागरिकों को नियुक्त करने वाले संगठनों को वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान किया जाए। हर आयु–वर्ग के अनुकूल कार्यस्थलों को प्रोत्साहित किया जाए और भर्ती एवं प्रतिधारण प्रथाओं में वरिष्ठ नागरिकों के साथ भेदभाव समाप्त किया जाए।
- वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए पुनर्कौशल कार्यक्रम बनाए जाएं।
- आज के बदलते रोजगार बाजार में रोजगार क्षमता और अनुकूलनशीलता को बढ़ाने के लिए आसान व सुगम वरिष्ठ–केंद्रित कौशल विकास कार्यक्रम शुरू किये जाएं।
- वरिष्ठ नागरिकों पर केंद्रित डिजिटल साक्षरता पहलों को मजबूत बनाया जाए।
- वरिष्ठ नागरिकों की सीखने की गति और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए डिजिटल शिक्षा योजनाएं बनायी जाए, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि वरिष्ठ नागरिक आधुनिक डिजिटल अवसरों से वंचित न रहें।
- लचीले कार्य मॉडल, हाइब्रिड नौकरियों और आयु–समावेशी मानव संसाधन प्रथाओं को बढ़ावा दिया जाए।
- अंशकालिक, दूरस्थ या हाइब्रिड कार्य और मानव संसाधन नीतियों को प्रोत्साहित किया जाए, जिनमें वृद्ध कर्मचारियों की प्राथमिकताओं और क्षमताओं को समायोजित किया जाए।

कॉर्पोरेट जगत के लिए

- वरिष्ठ नागरिकों के अनुकूल नौकरी की भूमिकाएँ डिजाइन करें।
- हल्के कार्यभार, स्पष्ट जिम्मेदारियों और वरिष्ठ नागरिकों के सकारात्मक पक्षों और सीमाओं के अनुकूल सहायक कार्य वातावरण बनाएँ।
- अनुभवी वरिष्ठ नागरिक सलाहकारों का उपयोग करके ज्ञान हस्तांतरण कार्यक्रम लागू करें।
- संरचित कार्यक्रमों में उन्हें सलाहकार के रूप में शामिल करके, अंतर–पीढ़ीगत शिक्षा को सुगम बनाकर, वरिष्ठ नागरिकों की विशेषज्ञता का लाभ उठाएँ।

- रिटायरमेंट के बाद परामर्श सेवाओं को प्रोत्साहित करें।
- सेवानिवृत्त पेशेवरों को परामर्श संबंधी कार्य प्रदान करें, उनके विशिष्ट ज्ञान का उपयोग करते हुए उन्हें निरंतर सम्मान और आय प्रदान करें।
- सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए कल्याण कार्यक्रम बनाएँ।
- सेवानिवृत्त लोगों के शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए स्वास्थ्य जाँच, परामर्श और सामाजिक जुड़ाव कार्यक्रम शुरू करें।

नागरिक संगठनों और गैर–सरकारी संगठनों के लिए

- समुदाय–आधारित सूक्ष्म–उद्यमों को सुगम बनाएँ।
- आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण, वित्त पोषण और बाजार पहुँच के साथ स्थानीय उद्यम शुरू करने में वरिष्ठ नागरिकों का समर्थन करें।
- वृद्धों के लिए स्वयं–सहायता मंचों को प्रोत्साहित करें।
- ऐसे मंच विकसित करें जो वरिष्ठ नागरिकों को सार्थक स्वरोजगार कार्यों से जोड़ें, सामाजिक समावेशन और व्यक्तिगत संतुष्टि को बढ़ाएँ।
- नौकरी चाहने वाले वरिष्ठ नागरिकों और स्थानीय व्यवसायों के बीच एक सेतु का काम करें।
- वरिष्ठ नागरिकों को व्यवसायों से जोड़कर और प्लेसमेंट समर्थन प्रदान करके स्थानीय नौकरियाँ ढूँढ़ने में मदद करें।

परिवारों के लिए

- बुजुर्ग सदस्यों को भावनात्मक और डिजिटल सहायता प्रदान करें।
- वरिष्ठ नागरिकों को भावनात्मक रूप से जुड़े रहने और ऑनलाइन सेवाओं और अवसरों तक स्वतंत्र रूप से पहुँचने के लिए डिजिटल ज्ञान प्राप्त करने में मदद करें।
- समय से पहले रिटायरमेंट लेने के बजाय सेवारत रहने के लिए प्रोत्साहित करें।
- रिटायरमेंट के लिए दबाव डालने के बजाय, वरिष्ठ नागरिकों को किसी काम या शौक में संलग्न रहकर सक्रिय बने रहने में सहायता करें।
- काम करने या अवकाश लेने का समय चुनने में उनकी पसंद का सम्मान करें।
- बुजुर्ग सदस्यों को अपनी पसंद और सम्मान का सम्मान करते हुए, काम जारी रखने या आराम करने का निर्णय लेने की स्वतंत्रता दें।

राज्य–विशिष्ट सुझाव

उत्तरी भारत

दिल्ली

(12 लाख बुजुर्ग, शहरी अर्थव्यवस्था, पीढ़ियों में उच्च डिजिटल अंतराल। औपचारिक क्षेत्रों में वरिष्ठ नागरिकों के साथ भेदभाव)

सुझावः

- नीति निर्माताः SACRED योजना और अन्य सेवानिवृत्ति–पश्चात लाभकारी सहभागिता योजनाओं के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों को नियुक्त करने के लिए कम्पनियों को प्रोत्साहित करें।
- कॉर्पोरेट जगतः शिक्षा और आईटी के क्षेत्र में परामर्शदात्री भूमिकाएँ प्रदान करें।
- गैर–सरकारी संगठनः सामुदायिक सेवा के लिए स्वयं–सहायता मंच बनाएँ।
- परिवारः नौकरी पाने के लिए डिजिटल कौशल सिखाएँ।

उत्तर प्रदेश

(सबसे बड़ी बुजुर्ग आबादी (1.54 करोड़), 77% ग्रामीण, उच्च वित्तीय असुरक्षा (9% कोई आय नहीं)। कृषि का प्रभुत्व, शहरी केंद्र (नोएडा, लखनऊ) औपचारिक नौकरियाँ प्रदान करते हैं)

सुझावः

- नीति निर्माताः SACRED पोर्टल का राज्य भर में विस्तार करें, वरिष्ठ नागरिकों को कृषि सहकारी समितियों से जोड़ें। महिलाओं के लिए चिकन कढ़ाई प्रशिक्षण के लिए धन उपलब्ध कराएँ।
- कॉर्पोरेट जगतः निजी स्कूलों (लखनऊ, कानपुर) में ट्यूशन के लिए सेवानिवृत्त शिक्षकों की नियुक्ति करें।
- गैर–सरकारी संगठनः ई–कॉमर्स लिंकेज (जैसे, फ्लिपकार्ट) के साथ हस्तशिल्प के सूक्ष्म उद्यमों का समर्थन करें।
- परिवारः वरिष्ठ नागरिकों को नौकरी पाने के लिए SACRED का उपयोग करना सिखाएँ।

राजस्थान

(51 लाख वरिष्ठ नागरिक, मजबूत कारीगरी विरासत, ग्रामीण स्वास्थ्य/परिवहन संबंधी बाधाएँ)

सुझावः

- नीति निर्माताः राजस्थान हस्तशिल्प नीति में वरिष्ठ नागरिकों को शामिल करें, कारीगर सहकारी समितियों को सब्सिडी दें। मोबाइल स्वास्थ्य वैन तैनात करें।
- कॉर्पोरेटः जयपुर/उदयपुर में वरिष्ठ नागरिकों को पर्यटन गाइड के रूप में नियुक्त करें।
- गैर–सरकारी संगठनः अमेजन सहेली जैसे कढ़ाई उद्यमों (शांति देवी मॉडल, आदि) का विस्तार करें।
- परिवारः अंतर–पीढ़ीगत जुड़ाव के लिए शिल्प में मार्गदर्शन को प्रोत्साहित करें।

पंजाब

(28.6 लाख वरिष्ठ नागरिक, कृषि अर्थव्यवस्था, उच्च पेंशन कवरेज (35.9%), सामाजिक अलगाव की चिंताएँ)

सुझावः

- नीति निर्माताः AVYAY की SCOPE पहल के तहत वरिष्ठ नागरिकों के नेतृत्व वाले कृषि प्रशिक्षण केंद्र बनाएँ।
- कॉर्पोरेटः चंडीगढ़ के कृषि–स्टार्टअप में सलाहकार भूमिकाओं के लिए वरिष्ठ नागरिकों को नियुक्त करें।
- गैर–सरकारी संगठनः अलगाव को कम करने के लिए सांस्कृतिक शिक्षण कार्यक्रम विकसित करें।
- परिवारः सामुदायिक कार्यक्रमों में भागीदारी का समर्थन करें।

हरियाणा

(21 लाख वरिष्ठ नागरिक, कृषि और शहरी उद्योगों (गुरुग्राम) का मिश्रण। डिजिटल निरक्षरता एक बाधा है)

सुझावः

- नीति निर्माताः राज्य में SACRED से जुड़ी डिजिटल साक्षरता कार्यशालाएँ आयोजित करें।
- कॉर्पोरेटः परामर्श के लिए गुरुग्राम की आईटी फर्मों में वरिष्ठ नागरिकों को शामिल करें।
- गैर–सरकारी संगठनः वरिष्ठ नागरिकों के लिए जैविक कृषि सहकारी समितियों को बढ़ावा दें।
- परिवारः नौकरी खोजने के लिए स्मार्टफोन के इस्तेमाल में सहायता करें।

चंडीगढ़

(1 लाख वरिष्ठ नागरिक, सेवा–आधारित अर्थव्यवस्था, उच्च साक्षरता)

सुझावः

- नीति निर्माताः AVYAY के माध्यम से प्रशासनिक कार्यों में वरिष्ठ नागरिकों को बढ़ावा दें।
- कॉर्पोरेटः शिक्षा में परामर्श के लिए अनुभवी वरिष्ठ नागरिकों नियुक्त करें।
- गैर–सरकारी संगठनः बुजुर्गों के लिए सांस्कृतिक स्वयंसेवा कार्यक्रम विकसित करें।
- परिवारः बुजुर्गों के सामुदायिक जुड़ाव का समर्थन करें।

जम्मू व कश्मीर

(7 लाख वरिष्ठ नागरिक, ग्रामीण शिल्प, पर्यटन संभावनाएँ)

सुझावः

- नीति निर्माताः कालीन बुनाई सहकारी समितियों को सब्सिडी दें।
- कॉर्पोरेटः वरिष्ठ नागरिकों को पर्यटन गाइड के रूप में नियुक्त करें।
- गैर सरकारी संगठनः शिल्प को ई–कॉमर्स से जोड़ें।
- परिवारः बुजुर्गों से मार्गदर्शन को प्रोत्साहित करें।

दक्षिणी भारत

केरल

(41 लाख वरिष्ठ नागरिक, 94% साक्षरता, मजबूत स्वास्थ्य सेवा, लेकिन प्रवास के कारण ग्रामीण अलगाव)

सुझावः

- नीति निर्माताः वरिष्ठ नागरिकों के नेतृत्व वाले शिक्षा कार्यक्रमों (जैसे, वयस्क साक्षरता कक्षाएं) से साक्षरता का लाभ उठाएँ।
- कॉर्पोरेटः कोच्चि के सेवा क्षेत्र में प्रशिक्षकों के रूप में वरिष्ठ नागरिकों को नियुक्त करें।
- गैर सरकारी संगठनः सामुदायिक स्वास्थ्य आउटरीच के लिए स्वयंसेवी प्लेटफॉर्म बनाएँ।
- परिवारः विदेशों या दूसरे शहरों में रह रहे बच्चों से जुड़ने के लिए ऑनलाइन जुड़ाव का समर्थन करें।

तमिलनाडु

(72 लाख वरिष्ठ नागरिक, शहरी केंद्र (चेन्नई), और कपड़ा/शिल्प परंपराएँ। महिलाओं को देखभाल संबंधी बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

सुझावः

- नीति निर्माताः कपड़ा सहकारी समितियों को सब्सिडी दें, जिनमें ज्यादातर वरिष्ठ महिलाएँ संलग्न रह सकती हैं।
- कॉर्पोरेटः चेन्नई के आईटी और रिटेल क्षेत्रों में सेवानिवृत्त लोगों को अंशकालिक रोजगार प्रदान करें।
- एन.जी.ओ.: वरिष्ठ नागरिकों को शिल्प (जैसे, कांचीपुरम साड़ियाँ) के बाजार को बढ़ाने के लिए ई–कॉमर्स से जोड़ें।
- परिवारः वरिष्ठ नागरिकों को ऑनलाइन बाजारों तक पहुंच बनाने के लिए डिजिटल प्रशिक्षण प्रदान करें।

कर्नाटक

(58 लाख वरिष्ठ नागरिक, तकनीकी केंद्र (बेंगलुरु), ग्रामीण कृषि। डिजिटल ज्ञान का अभाव)

सुझावः

- नीति निर्माताः ग्रामीण क्षेत्रों में वरिष्ठ नागरिकों पर केंद्रित डिजिटल प्रशिक्षण की योजना बनायें।
- कॉर्पोरेटः बेंगलुरु के स्टार्टअप्स में वरिष्ठ नागरिकों को सलाहकार के रूप में शामिल करें।
- एन.जी.ओ.: मैसूर में कृषि–आधारित छोटे व पारिवारिक उद्यमों का समर्थन करें।
- परिवारः अलगाव को कम करने के लिए स्वयं सहायता गतिविधियों को प्रोत्साहित करें।

आंध्र प्रदेश

(45 लाख वरिष्ठ नागरिक, कृषि–आधारित सांस्कृतिक, बढ़ते शहरी केंद्र (विशाखापत्तनम)

सुझावः

- नीति निर्माताः मत्स्य पालन और कृषि सहकारी समितियों में वरिष्ठ नागरिकों को बढ़ावा दें।

- कॉर्पोरेटः विशाखापत्तनम के बंदरगाहों में सलाहकारिता के लिए नियुक्त करें।
- एन.जी.ओ.: हस्तशिल्प बाजार विकसित करें और वरिष्ठ नागरिक की सहभागिता बढ़ायें।
- परिवारः सामुदायिक नेतृत्व में बुजुर्गों का समर्थन करें।

पूर्वी भारत

पश्चिम बंगाल

(65 लाख वरिष्ठ नागरिक, सांस्कृतिक विरासत, शहरी (कोलकाता) और ग्रामीण मिश्रण। वित्तीय अनिश्चितता अधिक)

सुझावः

- नीति निर्माताः वरिष्ठ नागरिकों के लिए जूट और हस्तशिल्प सहकारी समितियों को सब्सिडी दें।
- कॉर्पोरेटः कोलकाता में वरिष्ठ नागरिकों को सांस्कृतिक मार्गदर्शक के रूप में शामिल करें।
- गैर सरकारी संगठनः बुजुर्गों के लिए स्वयं सहायता कार्यक्रम बनाएँ।
- परिवारः SACRED पोर्टल तक पहुँच के लिए डिजिटल कौशल सिखाएँ।

ओडिशा

(38 लाख वरिष्ठ नागरिक, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, आदिवासी शिल्प। स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच सीमित)

सुझावः

- नीति निर्माताः कार्य क्षमता का समर्थन करने के लिए मोबाइल स्वास्थ्य क्लीनिक स्थापित करें।
- कॉर्पोरेटः भुवनेश्वर में हस्तशिल्प विपणन के लिए वरिष्ठ नागरिकों को नियुक्त करें।
- गैर सरकारी संगठनः वरिष्ठ नागरिकों के लिए आदिवासी कला उद्यमों को बढ़ावा दें।
- परिवारः शिल्प–आधारित व्यवसाय में बुजुर्गों द्वारा मार्गदर्शन को प्रोत्साहित करें।

असम

(22 लाख वरिष्ठ नागरिक, चाय बागान, ग्रामीण क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित। डिजिटल निरक्षरता एक चुनौती)

सुझावः

- नीति निर्माताः SACRED के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों को चाय उद्योग की गतिविधियों के लिए प्रशिक्षित करें।
- कॉर्पोरेटः वरिष्ठ नागरिकों को चाय निर्यात में सलाहकार के रूप में नियुक्त करें।
- गैर सरकारी संगठनः महिलाओं के लिए रेशम बुनाई उद्यमों का संचालन करें।
- परिवारः डिजिटल साक्षरता से नौकरियां पाने में सहायता करें।

पश्चिमी भारत

महाराष्ट्र

(98 लाख वरिष्ठ नागरिक, शहरी केंद्र (मुंबई, पुणे), ग्रामीण कृषि। औपचारिक क्षेत्रों में बुजुर्गों के साथ भेदभाव)

सुझावः

- नीति निर्माताः मुंबई के कॉरपोरेट जगत को कर छूट के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों को नियुक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- कॉर्पोरेट्सः वित्त और आईटी में सलाहकारिता संबंधी कार्य प्रदान करें।
- गैर सरकारी संगठनः ग्रामीण वरिष्ठ नागरिकों के लिए सामुदायिक केंद्र विकसित करें।
- परिवारः अलगाव को कम करने के लिए स्वयं सहायता समूहों का समर्थन करें।

गुजरात

(47 लाख वरिष्ठ नागरिक, औद्योगिक अर्थव्यवस्था, कपड़ा व्यापार। ग्रामीण परिवहन बाधाएँ)

सुझावः

- नीति निर्माताः अहमदाबाद में कपड़ा सहकारी समितियों को सब्सिडी दें।
- कॉर्पोरेट्सः सूरत के हीरा उद्योग में वरिष्ठ नागरिकों को नियुक्त करें।
- गैर सरकारी संगठनः वरिष्ठ नागरिकों को शिल्प जगत में कार्य करने के लिए ई–कॉमर्स से जोड़ें।
- परिवारः बाजार तक पहुँच के लिए डिजिटल कौशल सिखाएँ।

गोवा

(1.5 लाख वरिष्ठ नागरिक, पर्यटन–संचालित अर्थव्यवस्था, उच्च साक्षरता)

सुझावः

- नीति निर्माताः पर्यटन में वरिष्ठ नागरिकों को सांस्कृतिक राजदूत के रूप में बढ़ावा दें।
- कॉर्पोरेटः अंशकालिक आतिथ्य–सत्कार गतिविधियों के लिए नियुक्त करें।
- गैर–सरकारी संगठनः विरासत संरक्षण के लिए बुजुर्गों के स्व–सहायता मंच बनाएँ।
- परिवारः सामुदायिक जुड़ाव को प्रोत्साहित करें।

मध्य भारत

मध्य प्रदेश

(5.3 लाख वरिष्ठ नागरिक, ग्रामीण कृषि, सीमित शहरी अवसर)

सुझावः

- नीति निर्माताः SACRED के माध्यम से कृषि–आधारित सहकारी समितियों को वित्त पोषित करें।
- कॉर्पोरेटः राज्य के लघु उद्योगों में वरिष्ठ नागरिकों को नियुक्त करें।
- गैर–सरकारी संगठनः आदिवासी क्षेत्रों में हस्तशिल्प उद्यमों को बढ़ावा देने में बुजुर्गों की सेवाएं लें।

- परिवारः दूसरे रोजगार पाने में डिजिटल/ऑनलाइन माध्यमों की जानकारी पाने में सहायता करें।

बिहार

(76 लाख वरिष्ठ नागरिक, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, अपेक्षाकृत अधिक गरीबी। वित्तीय असुरक्षा की स्थिति गंभीर)

सुझावः

- नीति निर्माताः राज्य भर में वृद्धावस्था पेंशन और SACRED आउटरीच का विस्तार करें।
- कॉर्पोरेटः शिक्षा/ट्यूशन के क्षेत्र में वरिष्ठ नागरिकों को शामिल करें।
- गैर–सरकारी संगठनः कृषि–आधारित छोटे उद्यमों को बढ़ावा दें।
- परिवारः सामुदायिक नेतृत्व गतिविधियों में वरिष्ठ नागरिकों को प्रोत्साहित करें।

झारखंड

(21 लाख वरिष्ठ नागरिक, आदिवासी संस्कृति, ग्रामीण क्षेत्र की प्रधानता। स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच कम)

सुझावः

- नीति निर्माताः वरिष्ठ नागरिकों की कार्य क्षमता बढ़ाने के लिए स्वास्थ्य क्लीनिक स्थापित करें।
- कॉर्पोरेटः शहरी क्षेत्रों के छोटे व्यवसायों में वरिष्ठ नागरिकों को नियुक्त करें।
- गैर–सरकारी संगठनः आदिवासी शिल्प उद्यमों का समर्थन करें।
- परिवारः शिल्प में बुजुर्गों के मार्गदर्शन को प्रोत्साहित करें।

अन्य राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के लिए सुझाव

(हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, तेलंगाना, मणिपुर, नागालैंड, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, मेघालय, सिक्किम, छत्तीसगढ़, आदि)

- नीति निर्माताः SACRED और AVYAY को स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं (जैसे, सिक्किम में पर्यटन, छत्तीसगढ़ में कृषि) के अनुकूल बनाएँ। डिजिटल साक्षरता और स्वास्थ्य क्लीनिकों को वित्तपोषित करें।
- कॉर्पोरेटः स्थानीय उद्योगों (जैसे, हिमाचल, उत्तराखंड में बागवानी) में अंशकालिक कार्य प्रदान करें।
- गैर–सरकारी संगठनः क्षेत्रीय शिल्प या कृषि पर आधारित सूक्ष्म उद्यमों को बढ़ावा दें।

परिवारः अलगाव को कम करने के लिए डिजिटल पहुँच और सामुदायिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करें।

निष्कर्ष

14.9 करोड़ वरिष्ठ नागरिक देश के लिए सशक्त संसाधन हैं, जो अपने अनुभव से देश की प्रगति को गति प्रदान करने में सक्षम हैं। 2050 तक 30 करोड़ तक पहुंचने वाली इस आबादी का देश की मुख्यधारा में योगदान सुनिश्चित करने के लिए आज इस तेजी से उभरते संसाधन को पुनर्परिभाषित करना अत्यावश्यक हो गया है। कार्य से जुड़ाव, स्वास्थ्य, सम्मान और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है, फिर भी अभी केवल 23.1% लोग ही रिटायरमेंट के बाद कार्य करते हैं और अधिकतर को डिजिटल निरक्षरता और बुजुर्गों के साथ भेदभाव जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ता हैं।

वृद्धावस्था को पतन के दौर से संभावनाओं के दौर में बदलने का समय आ गया है। उचित संस्थागत समर्थन से, भारत के वरिष्ठ नागरिक सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के सशक्त माध्यम बन सकते हैं। वृद्धावस्था में लाभकारी सहभागिता के महत्व को समझना केवल नीतिगत अनिवार्यता ही नहीं, बल्कि एक सामाजिक दायित्व भी है। अपने वरिष्ठ नागरिकों को सार्थक योगदान देने में सक्षम बनाकर, हम न केवल उनके जीवन स्तर में सुधार ला सकते हैं, बल्कि एक मूल्यवान जनसांख्यिकीय संसाधन का भी उपयोग कर सकते हैं, जो हमारी अर्थव्यवस्था और संस्कृति दोनों को समृद्ध बना सकता है।

Agewell

एजवेल फाउंडेशन

एजवेल फाउंडेशन एक गैर–लाभकारी गैर–सरकारी संगठन है, जो 1999 से भारत में वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण एवं सशक्तिकरण के लिए कार्यरत है। एजवेल अपने स्वयंसेवकों के राष्ट्रव्यापी नेटवर्क के माध्यम से प्रतिदिन 25,000 से अधिक बुजुर्गों से संपर्क करता है। एजवेल फाउंडेशन द्वारा किए जा रहे कार्यों को मान्यता देते हुए, संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक परिषद् (इकोसॉक) ने 2011 में एजवेल फाउंडेशन को विशेष सलाहकार का दर्जा प्रदान किया। एजवेल संयुक्त राष्ट्र के जन–सूचना विभाग (UN-DPI-NGO) से संबद्ध है। एजवेल फाउंडेशन वर्तमान में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के वरिष्ठ नागरिकों हेतु जागरूकता एवं क्षमता निर्माण कार्य समूह; नीति आयोग की नागरिक समाज संगठनों की स्थायी समिति की वृद्धजन देखभाल उप–समूह और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की एक विशेषज्ञ समिति का भी सदस्य है।

एजवेल फाउंडेशन

(स्पेशल कन्सल्टेटिव स्टेटस, इकॉसॉक, संयुक्त राष्ट्र, 2011)

एम–8ए, लाजपत नगर–2, नई दिल्ली–110024, भारत. फोनः 91–11–29836486, 29830005

agewellfoundation@gmail.com www.agewellfoundation.org